नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 040
दि. 12.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

बिहार में फिर नीतीश की लहर: एग्जिट पोल्स में एनडीए को भारी बढ़त, महागठबंधन को करारा झटका, महिला मतदाता बने जीत की कुंजी

(जीएनएस)। पटना। बिहार की राजनीति में एक बार फिर 'नीतीश युग' लौटने की संभावना जताई जा रही है। दोनों चरणों के मतदान के बाद जारी 17 अलग-अलग एजेंसियों के एग्जिट पोल्स के औसत नतीजों में एनडीए को स्पष्ट और आरामदायक बहुमत मिलता दिख रहा है। अगर ये अनुमान सही साबित होते हैं तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगातार चौथी बार सत्ता पर काबिज होंगे और "फिर एक बार नीतीश सरकार" का नारा हकीकत में बदल जाएगा। इन पोल्स के मुताबिक एनडीए को 154 सीटें, महागठबंधन को 83 सीटें, और अन्य को 5 सीटें मिलने का अनुमान है। वहीं, प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी जो पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरी, उसे केवल 3 से 5 सीटों का अनुमान मिला है। यह नतीजे बिहार के राजनीतिक समीकरणों को एक बार फिर बदलते हुए दिख रहे हैं, जहां नीतीश कुमार ने एक बार फिर महिला, ग्रामीण और पिछड़े तबकों के वोटों पर निर्णायक पकड़ बना ली है। 243 सीटों वाली विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा 122 है, और एनडीए का यह अनुमानित प्रदर्शन उसे बहुमत से काफी आगे ले जाता है। यह न केवल एनडीए के लिए राहत भरी खबर है, बल्कि उन राजनीतिक विश्लेषकों के लिए भी चौंकाने वाला है जो मानते थे कि इस बार एंटी-इनकंबेंसी (विरोधी लहर) नीतीश के लिए चुनौती बनेगी।

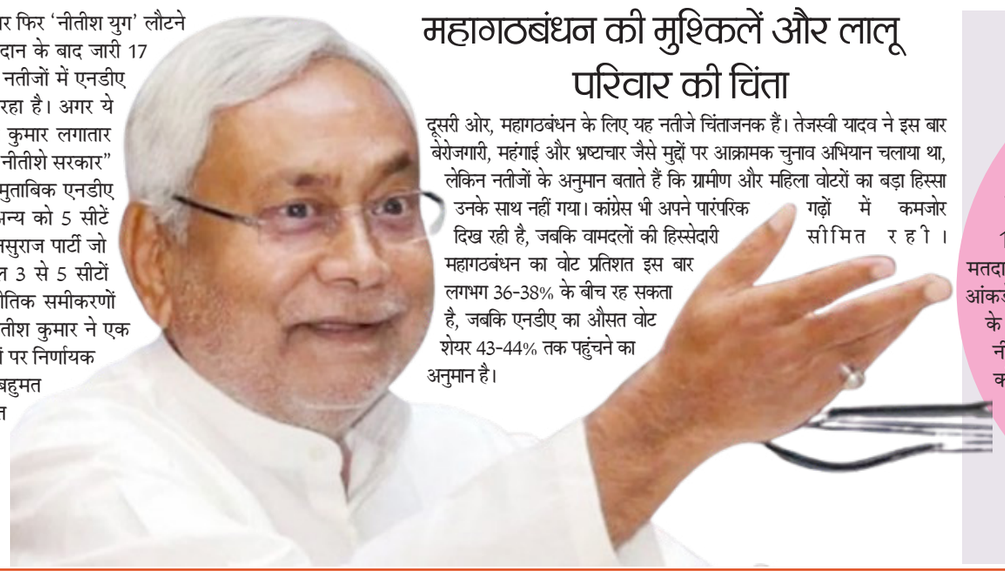

महागठबंधन की मुश्किलें और लालू परिवार की चिंता

दूसरी ओर, महागठबंधन के लिए यह नतीजे चिंताजनक हैं। तेजस्वी यादव ने इस बार बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर आक्रामक चुनाव अभियान चलाया था, लेकिन नतीजों के अनुमान बताते हैं कि ग्रामीण और महिला वोटरों का बड़ा हिस्सा उनके साथ नहीं गया। कांग्रेस भी अपने पारंपरिक गढ़ों में कमजोर दिख रही है, जबकि वामदलों की हिस्सेदारी सीमित रही। महागठबंधन का वोट प्रतिशत इस बार लगभग 36-38% के बीच रह सकता है, जबकि एनडीए का औसत वोट शेयर 43-44% तक पहुंचने का अनुमान है।

इतिहास का सबसे ज्यादा मतदान महिला वोटरों का निर्णायक प्रभाव

इस बार बिहार ने मतदान के नए रिकॉर्ड बनाए हैं। पहले चरण में 121 सीटों पर 65 प्रतिशत और दूसरे चरण में 122 सीटों पर 68.5 प्रतिशत मतदान हुआ — यह बिहार के चुनावी इतिहास में सबसे ऊंचा आंकड़ा है। चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि इस बार महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही, जो नीतीश कुमार के लिए शुभ संकेत है। नीतीश कुमार का महिला वोट बैंक हमेशा से उनकी राजनीतिक नींव रहा है — चाहे शराबबंदी का कानून हो, पंचायतों में 50% आरक्षण या छात्राओं को साइकिल देने की योजना। इस बार भी मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत लाखों महिलाओं को 10-10 हजार रुपये की सहायता राशि सीधे उनके खातों में भेजी गई, जिसने वोटिंग पैटर्न को काफी प्रभावित किया। राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि महिलाओं ने एक बार फिर "स्थिरता और सुरक्षा" के नाम पर नीतीश कुमार पर भरोसा जताया, जबकि विपक्ष के वादे उन्हें आश्वस्त नहीं कर सके।

प्रशांत किशोर की 'जनसुराज' — अभी लंबा रास्ता बाकी

प्रशांत किशोर ने राजनीति में एक नया प्रयोग करते हुए "जनसुराज" आंदोलन के साथ सीधे मैदान में उतरने का फैसला किया था। उन्होंने दावा किया था कि जनता बदलाव चाहती है और पारंपरिक पार्टियों से थक चुकी है। लेकिन एग्जिट पोल्स के आंकड़े बताते हैं कि उनकी पार्टी राज्य स्तर पर प्रभाव छोड़ने में नाकाम रही। हालांकि राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि जनसुराज का वोट शेयर कुछ खास सीटों पर महागठबंधन को नुकसान पहुंचा सकता है, खासकर उन इलाकों में जहां पिछड़े और युवा वोटर्स की भूमिका निर्णायक थी। बिहार के चुनावी इतिहास में एग्जिट पोल्स का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। 2015 में लगभग सभी सर्वेक्षणों ने एनडीए को बहुमत का अनुमान दिया था, जबकि परिणामों में महागठबंधन ने भारी जीत दर्ज की थी। वहीं 2020 में हालात उलटे रहे — पोल्स ने महागठबंधन को आगे दिखाया, लेकिन नतीजों में एनडीए ने 125 सीटें जीतकर सरकार बनाई। इसलिए इस बार भी राजनीतिक विश्लेषक सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं। उनका कहना है कि "बिहार का वोटर आखिरी पल तक अपने मन की बात जाहिर नहीं करता," और कई बार एग्जिट पोल्स उस सूक्ष्म सामाजिक गणित को पकड़ने में असफल रहते हैं जो बिहार की राजनीति को दिशा देता है।

दिल्ली धमाके के गुनहगारों को सजा मिलेगी, कोई नहीं बचेगा : प्रधानमंत्री मोदी का भूटान से सख्त संदेश

(जीएनएस)। थिम्फू। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भूटान की धरती से दिल्ली धमाके पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि इस कायराना हमले के दोषियों को किसी भी हालत में बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह भारत पर हमला नहीं, बल्कि मानवता पर प्रहार है, और देश की एजेंसियां इसकी साजिश की जड़ तक जाकर हर एक जिम्मेदार व्यक्ति को कानून के कटघरे में खड़ा करेंगी।

प्रधानमंत्री मोदी इस समय भूटान के दो दिवसीय राजकीय दौरे पर हैं, जहां वे भूटान के चौथे नरेश जिग्मे सिंग्ये वांगचुक के 70वें जन्मोत्सव समारोह में भाग लेने पहुंचे। थिम्फू के चांगलीमेथांग सेलिब्रेशन ग्राउंड में आयोजित समारोह के मंच से उन्होंने दिल्ली धमाके पर पहली बार खुलकर बयान दिया। भावुक स्वर में प्रधानमंत्री ने कहा, "मैं आज यहां एक भारी मन से आया हूं। दिल्ली में हुआ भयानक विस्फोट पूरे भारत को हिला देने वाला है। जिन्होंने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके दुख में पूरा देश सहभागी है। मेरी संवेदनाएं हर उस परिवार के साथ हैं, जिसने इस हादसे में अपनों को खो दिया।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि दिल्ली धमाके के

बाद वे लगातार जांच एजेंसियों और वरिष्ठ अधिकारियों के संपर्क में रहे हैं। "हम हर सुराग, हर कड़ी को जोड़ रहे हैं। यह साजिश कितनी गहरी है, यह सामने आएगा। लेकिन एक बात मैं साफ कह देना चाहता हूं — भारत अब किसी आतंकी मानसिकता या हिंसा के आगे झुकेगा नहीं। जो लोग निर्दोषों का खून बहाते हैं, वे कानून से बच नहीं सकते," उन्होंने कहा।

भूटान यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने वहां के नरेश और नागरिकों के साथ मिलकर दिल्ली धमाके के पीड़ितों की आत्मा की शांति के लिए मौन भी रखा। पूरा कार्यक्रम स्थल उस समय गंभीर वातावरण में डूब गया जब भूटानी नागरिकों ने भारत के साथ एकजुटता दिखाते हुए खामोशी से श्रद्धांजलि दी।

इसके बाद प्रधानमंत्री ने भारत और भूटान के ऐतिहासिक संबंधों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच आध्यात्मिक और सांस्कृतिक बंधन हजारों साल पुराने हैं। "भूटान की भूमि करुणा, शांति और बुद्धत्व की चेतना से ओत-प्रोत है। यही भावना भारत-भूटान की साझेदारी की आत्मा है," मोदी ने कहा।

भूटान के चौथे राजा की दूरदर्शी नीतियों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि भूटान ने दुनिया को दिखाया है कि आधुनिक विकास और पर्यावरण संरक्षण साथ-साथ चल सकते हैं। उन्होंने 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता' (Gross National Happiness) की अवधारणा को विश्व के लिए प्रेरणा बताते हुए कहा कि भूटान ने जिस तरह खुशी को विकास का मानक बनाया है, वह मानव सभ्यता के लिए एक नई सोच है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत और भूटान के बीच ऊर्जा सहयोग दोनों देशों के आर्थिक संबंधों की रीढ़ बन चुका है। "पनबिजली परियोजनाएं केवल ऊर्जा नहीं, बल्कि साझा समृद्धि का प्रतीक हैं। हमारे युवाओं के बीच बढ़ता नवाचार और तकनीकी सहयोग आने वाले वर्षों में दक्षिण एशिया की दिशा तय करेगा," उन्होंने कहा।

प्रधानमंत्री मोदी के भाषण के दौरान वहां मौजूद हजारों भूटानी नागरिकों ने "भारत-भूटान मित्रता अमर रहे" के नारों से पूरा मैदान गूंजा दिया।

भूटान की शांत घाटियों से उठे प्रधानमंत्री मोदी के ये सख्त शब्द न केवल भारत के भीतर आतंकवाद पर सख्त कार्रवाई का संकेत देते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि भारत अब किसी भी आतंकी चुनौती का जवाब सिर्फ शब्दों में नहीं, बल्कि निर्णायक कदमों से देगा।

दिल्ली धमाके के तार यूपी से जुड़े, एटीएस ने डॉ. आदिल के दो सहयोगियों को दबोचा

(जीएनएस)। नई दिल्ली/लखनऊ/सहारनपुर। दिल्ली के लालकिले के पास सोमवार शाम हुए भीषण धमाके के बाद पूरे उत्तर भारत में खुफिया एजेंसियां अलर्ट पर हैं। विस्फोट में आतंकी साजिश के संकेत मिलने के बाद उत्तर प्रदेश एटीएस ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए कई जगह छापेमारी की और जम्मू-कश्मीर के आतंकी डॉ. आदिल अहमद राठर के दो नजदीकी सहयोगियों को हिरासत में लिया है। जानकारी के अनुसार, एटीएस की टीम ने लखनऊ, सहारनपुर और शामली में एक साथ दबिश दी। लखनऊ के लालबाग क्षेत्र में रहने वाली डॉक्टर शाहीन के घर पहुंचकर टीम ने उनके परिजनों से घंटों तक पूछताछ की। डॉ. शाहीन को कुछ दिन पहले जम्मू-कश्मीर पुलिस ने फरीदाबाद से गिरफ्तार किया था, जहां से भारी मात्रा में विस्फोटक और हथियार बरामद किए गए थे। जांच एजेंसियों को शक है कि शाहीन और आदिल, दोनों एक ही आतंकी नेटवर्क से जुड़े हुए हैं। शाहीन के पिता ने बताया कि उनकी बेटी करीब डेढ़ साल से परिवार से संपर्क में नहीं थी और पिछले दो वर्षों से घर भी नहीं लौटी थी। उन्होंने कहा, "हमें नहीं पता था कि वह

किससे जुड़ी हुई है। हम चाहते हैं कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच हो ताकि सच्चाई सामने आ सके।"

सूत्रों के मुताबिक, यूपी एटीएस को जम्मू-कश्मीर पुलिस से मिली गुप्त सूचना के बाद यह कार्रवाई की गई। दोनों राज्यों की संयुक्त टीम ने सहारनपुर के अंबाला रोड स्थित एक मकान से दो संदिग्धों को हिरासत में लिया है, जो डॉ. आदिल के करीबी बताए जा रहे हैं। फिलहाल दोनों से गहन पूछताछ जारी है और उनके इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जब्त कर लिए गए हैं।

डॉ. आदिल अहमद राठर जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले का रहने वाला है और कुछ महीने पहले तक सहारनपुर के एक निजी अस्पताल 'फेमस हॉस्पिटल' में मेडिसिन विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत था। जांच एजेंसियों को शक है कि अस्पताल की आड़ में वह आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े लोगों को वित्तीय और लॉजिस्टिक मदद पहुंचा रहा था।

गौरतलब है कि आदिल को 28 अक्टूबर को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने श्रीनगर से गिरफ्तार किया था। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर उसकी पहचान की थी, जिसमें वह जैश-ए-मोहम्मद के समर्थन में पोस्टर चिपकाते हुए दिखाई दिया था। उसी जांच के बाद फरीदाबाद से विस्फोटक बरामद हुए थे और अब दिल्ली धमाके से उसके नेटवर्क की कड़ियां मिलने लगी हैं।

एटीएस अधिकारियों का कहना है कि फिलहाल पूरे नेटवर्क को खंगाला जा रहा है। मोबाइल डेटा, बैंक ट्रांजैक्शन और कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स की जांच की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि दिल्ली धमाके के पीछे कौन-कौन शामिल था। अधिकारियों के मुताबिक, यह नेटवर्क न सिर्फ जम्मू-कश्मीर बल्कि हरियाणा, यूपी और दिल्ली तक फैला हुआ है।

राजधानी में सोमवार शाम लालकिले के पास खड़ी एक कार में हुए धमाके ने सुरक्षा एजेंसियों की नींद उड़ा दी थी। धमाके में आठ लोगों की मौत हो गई और दर्जनों घायल हुए थे। शुरुआती जांच में पता चला कि कार में अत्याधुनिक विस्फोटक लगाया गया था, जो रिमोट से डिटोनेट किया गया। अब एटीएस, एनआईए और दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल मिलकर इस पूरे मॉड्यूल को उजागर करने में जुटी हैं।

खुफिया सूत्रों का कहना है कि यह मामला एक बड़े आतंकी नेटवर्क से जुड़ा हो सकता है, जिसका मकसद राष्ट्रीय राजधानी में दहशत फैलाना था।

दिल्ली ब्लास्ट: जब टैटू, नीली शर्ट और जिस्म के चिथड़े बने पहचान का जरिया लाल किले के पास हुआ वो धमाका जिसने झकझोर दिया पूरा देश

(जीएनएस)। दिल्ली में हुआ वो धमाका जिसने सब कुछ बदल दिया। एक पल पहले जो सड़कें आवाजों, हंसी और चहल-पहल से गूंज रही थीं, अगले ही पल वही सड़कें चीखों और सन्नाटे में डूब गईं। लाल किले के मेट्रो स्टेशन के पास सोमवार की शाम को हुए इस भयानक ब्लास्ट ने ऐसा खौफ और दर्द छोड़ा कि उसकी गूंज अब भी लोगों के दिलों में गहराई तक उतर गई है। शाम के ठीक 6 बजकर 52 मिनट पर हुआ वो धमाका जिसने दस जिंदगियों को पलभर में खत्म कर दिया। किसी का सिर धड़ से अलग था, किसी के पैर और हाथ शरीर से उड़ चुके थे, और कुछ शव ऐसे थे जिन्हें पहचानना तक नामुमकिन हो गया था। एलएनजेपी अस्पताल के बाहर रात भर मातम पसरा रहा। जिन आंखों ने अपने बच्चों को हंसते देखा था, अब वही आंखें अस्पताल की ठंडी जमीन पर उन शवों के बीच तलाश कर रही थीं जिन्हें सिर्फ टैटू या फटे कपड़ों के टुकड़ों से पहचानना पड़ा। जो मां एक आहट से अपने बेटे को पहचान लेती है, उसे अब अपने बच्चे को उसकी नीली शर्ट, आधी जली जैकेट या बांह पर बने एक छोटे से टैटू से पहचानना पड़ा।

चांदनी चौक के रहने वाले 34 साल के अमर कटारिया भी उसी हादसे का हिस्सा बन गए थे। वो दवाइयों का कारोबार करते थे। धमाके के वक्त वहीं थे। जब परिवार ने उन्हें खोजा तो सिर्फ जले हुए शरीर के अवशेष मिले। पहचान कर पाना असंभव था, पर उनकी बांह पर बना एक टैटू उन्हें पहचानने का जरिया बना। परिवार ने बताया कि वह टैटू अमर ने अपनी मां, पिता और पत्नी के नाम पर बनवाया था। वह निशान अब परिवार की यादों का एकमात्र सहारा रह गया। इसी हादसे में मोहम्मद जुम्मन नाम का एक रिक्शा चालक भी मारा गया। 35 साल का जुम्मन अपने घर का इकलौता कमाने वाला सदस्य था। उसकी पत्नी दिव्यांग है और तीन छोटे बच्चे हैं। जब वह सोमवार शाम को रोज की तरह रिक्शा लेकर लाल किले के इलाके में निकला था, तब किसी को क्या पता था कि यह उसका आखिरी सफर होगा। देर रात तक परिवार उसका इंतज़ार करता रहा, फोन करते रहे, पर कोई जवाब नहीं मिला। रात करीब 9 बजे उसका मोबाइल सिग्नल बंद हो गया। सुबह पुलिस ने अस्पताल में बुलाया — और वहीं, जले हुए कपड़ों के बीच एक नीली शर्ट और आधी फटी जैकेट देखकर परिवार की उम्मीदें टूट गईं। वो नीली शर्ट अब उसके होने का सबूत थी।

इसी तरह 30 साल के पंकज साहनी की भी कहानी उतनी ही दर्दनाक है। वो कैब ड्राइवर था। शाम करीब साढ़े पांच बजे वो पुरानी दिल्ली इलाके में एक सवारी छोड़ने गया था। घर वालों ने रात 9 बजे खबर सुनी कि लाल किले के पास ब्लास्ट हुआ है। जब पिता ने फोन लगाया, तो उधर से कोई आवाज नहीं आई। देर रात पुलिस का फोन आया और सवाल हुआ — "आपके बेटे ने क्या पहना था?" पिता ने जवाब दिया — "शर्ट और नीली जींस।" कुछ ही देर बाद उन्हें अस्पताल बुलाया गया। पिता ने सोचा शायद बेटा घायल होगा, लेकिन जब उन्हें उस कमरे में ले जाया गया जहां शव रखे थे, तो वहां सिर्फ एक जला हुआ शरीर था जिसे उन्होंने अपने बेटे के कपड़ों से पहचाना। लाल किले के पास अब भी उस मंजर के निशान बाकी हैं। जले हुए वाहन, टूटे शीशे, फटे कपड़ों के टुकड़े, और चारों ओर फैली बारूद की गंध। ये गवाही देते हैं कि कैसे एक पल में इंसान की बनाई दुनिया राख बन सकती है। उन गलियों में अब भी मातम है, अस्पतालों में अब भी चीखें हैं, और उन परिवारों के दिलों में वो दर्द है जो शायद कभी खत्म नहीं होगा।

डेविड स्ज़ेले बने बुकर पुरस्कार विजेता, उपन्यास 'फ्लेश' ने छुआ प्रवासी जीवन का दर्द और संघर्ष का यथार्थ

(जीएनएस)। लंदन। साहित्य की दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक बुकर पुरस्कार इस बार ब्रिटिश लेखक डेविड स्ज़ेले को उनके उपन्यास 'फ्लेश' के लिए मिला है। हंगरी में जन्मे और ब्रिटेन में बस चुके स्ज़ेले ने अपनी इस कृति में प्रवासी जीवन की उलझनों, श्रमिक वर्ग की जद्दोजहद और पहचान की तलाश को बेहद मानवीय दृष्टिकोण से उकेरा है। यह उपन्यास आधुनिक समाज में व्यक्ति के अस्तित्व की लड़ाई, प्रेम और अकेलेपन के भावों को एक साथ पिरोता है।

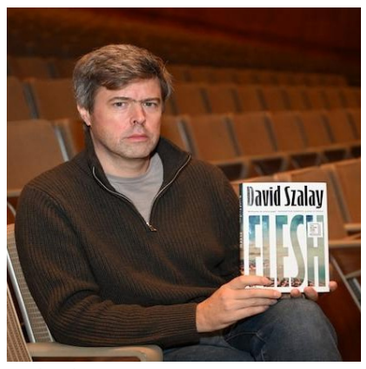

51 वर्षीय स्ज़ेले ने इस सम्मान की दौड़ में ब्रिटिश लेखक एंड्रयू मिलर और भारतीय मूल की लेखिका किरण देसाई सहित पाँच अन्य चर्चित लेखकों को पीछे छोड़ दिया। पुरस्कार के रूप में उन्हें 50,000 पाउंड की राशि दी जाएगी। साहित्य समीक्षकों के अनुसार, 'फ्लेश' वह दुर्लभ उपन्यास है जो अपनी सहजता में गहराई और सादगी में तीव्रता रखता है।

बुकर जूरी के सदस्य और आयरिश लेखक रॉडी डॉयल ने कहा, "डेविड स्ज़ेले की लेखनी जीवन की विसंगतियों को उतनी ही सरलता से दिखाती है जितनी गहराई से वह आत्मा के भीतर झांकती है। 'फ्लेश' एक ऐसा उपन्यास है जो सामान्य जीवन की परतों में छिपे असाधारण को उजागर करता है।" निर्णायक मंडल में रॉडी डॉयल के साथ अभिनेत्री सारा जेसिका पार्कर सहित कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हस्तियां शामिल थीं, जिन्होंने 153 उपन्यासों में से सर्वसम्मति से 'फ्लेश' को विजेता चुना।

उपन्यास की कहानी इस्तवान नामक पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है — एक हंगरी का साधारण युवक जो किशोरावस्था में एक बड़ी उम्र की महिला से अपने पहले प्रेम का अनुभव करता है और फिर ब्रिटेन जाकर नए जीवन की तलाश में संघर्ष करता है। उसका सफर प्रेम, हानि, अस्वीकार और आत्मपहचान की तलाश का प्रतीक बन जाता है। उपन्यास में अप्रवासी जीवन की जटिलताओं और पश्चिमी समाज की वर्गीय सीमाओं को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया गया है।

डेविड स्ज़ेले ने पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा, "यह कहानी सिर्फ मेरे पात्र इस्तवान की नहीं, बल्कि उन तमाम लोगों की है जो अपने देश छोड़कर नए सपनों की तलाश में निकलते हैं। 'फ्लेश' उनके भीतर के दर्द और उम्मीद की आवाज़ है।"

साहित्यिक आलोचकों का मानना है कि यह उपन्यास प्रवासी अनुभवों की परंपरा में एक नया अध्याय जोड़ता है — जहाँ पहचान और अस्मिता की लड़ाई किसी राष्ट्र की नहीं, बल्कि मनुष्य की आत्मा की हो जाती है। 'फ्लेश' को आने वाले समय में यूरोपीय प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी माना जा रहा है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

बड़ी आतंकी साजिश के खुलते सूत्र

सोमवार की शाम दिल्ली में लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास एक कार में हुए धमाके में कुछ अनमोल जिंदगियों का खत्म होना बेहद दुखद है। काफी संख्या में लोगों के घायल होने की भी खबरें हैं। धमाके के बाद आसपास के कई वाहनों में लगी आग पर काबू पाने में अग्निशमन दल को खासी मशक्कत करनी पड़ी। पहली नजर में पुलिस इसे आतंकी घटना मानकर चल रही है। इसे संयोग मानें या दुर्योग कि आतंकवादियों के किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान को निशाने बनाने से पहले कार में ही धमाका हो गया। देश की केंद्रीय एजेंसियां आतंकवादियों की साजिश को बेनकाब करने में जुटी हैं। पहले फरीदाबाद में कई जगह से भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री की बरामदगी और फिर दिल्ली में धमाके का एक दिन होना, निस्संदेह किसी बड़ी साजिश की आशंका की ओर इशारा कर रहा है। उल्लेखनीय है कि हरियाणा स्थित फरीदाबाद के फतेहपुर तगा गांव में राज्य और जम्मू एवं कश्मीर पुलिस की साझा रेड में करीब तीन हजार किलो से अधिक विस्फोटक पदार्थ बरामद हुआ था। इस मामले में गिरफ्तार दो आरोपी कश्मीरी मूल के बताए जाते हैं। इससे पहले रविवार को गांव के एक कमरे से 360 किलो अमोनियम नाइट्रेट बरामद होने की बात कही जा रही है। कल पुलिस ने दूसरे घर से 2,563 संदिग्ध विस्फोटक की बरामदगी की है। बताया जाता है कि एक मौलाना ने यह घर एक डॉ. मुजामिल ने किराये पर लिया हुआ था। पुलिस तफ्तीश में जुटी है कि इस विस्फोटक का कहां इस्तेमाल किया जाना था और क्या इनके किसी आतंकी संगठन से तार जुड़े हैं। पुलिस का दावा है कि डॉक्टर के फरीदाबाद स्थित ठिकाने से अधिकारियों ने अमोनियम नाइट्रेट और अन्य रासायनिक पदार्थों सहित आईईडी बनाने की सामग्री का एक बड़ा जखीरा बरामद किया है। जाहिर है, देश के भीतर बड़ा आतंकी हमला करने की साजिश रची जा रही थी। इस मामले में मिल रही चौंकाने वाली जानकारी इसी ओर संकेत कर रही है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस दावा कर रही है कि उसने विभिन्न क्षेत्रों में पेशेवर चिकित्सकों के एक कट्टरपंथी मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। आधिकारिक सूत्र दावा कर रहे हैं कि इस साजिश का खुलासा उस समय हुआ जब श्रीनगर के नोगाम इलाके में एक पोस्टर लगा दिखा, जिसमें दुकानदारों को केंद्रीय एजेंसियों से लेन-देन न करने की चेतावनी दी गई थी। बताया जाता है कि सीसीटीवी फुटेज में पोस्टर लगाने वाले जिस व्यक्ति की शिनाख्त हुई, वह सहारनपुर में कश्मीरी मूल का डॉक्टर अदील निकला। पूछताछ में उसके श्रीनगर में कुछ अन्य डॉक्टरों से संबंधों का खुलासा हुआ। डॉ. अदील की गिरफ्तारी के बाद फरीदाबाद में डॉ. मुजामिल सहित अन्य डॉक्टरों की पहचान हुई। बताते हैं कि फरीदाबाद स्थित एक क्लीनिक से ही बड़ी मात्रा में विस्फोटक बरामद हुए। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि मानवता की सेवा की शपथ लेकर चिकित्सा के पेशे में आने वाले लोग कैसे कट्टरपंथ के चलते लोगों की जिंदगी छीनने वाले खौफनाक खेल का हिस्सा बन गए। जाहिर है, इस मॉड्यूल का मकसद देश के विभिन्न हिस्सों में धमाकों के जरिये दशहत फैलाना ही रहा होगा। निश्चय ही बड़ी मात्रा में विस्फोटकों की बरामदगी तथा आईईडी बनाने के सामान बरामद होना किसी बड़ी साजिश की ओर ही इशारा कर रहा है। निस्संदेह, राजग सरकार के दौरान दिल्ली में हुआ यह पहला बड़ा धमाका सरकार की चिंता बढ़ाने वाला है। लाल किले मेट्रो स्टेशन के निकट हुए धमाके में इस्तेमाल कार में बैठे एक घायल व्यक्ति की गिरफ्तारी की खबर कुछ सूचना माध्यमों में देखी गई। यदि वाकई गिरफ्तार व्यक्ति साजिशकर्ताओं का साथी निकला तो पुलिस को इस आतंकी षड्यंत्र की तह तक पहुंचने में मदद मिल सकेगी। जिससे अनेक लोगों को किसी बड़ी आतंकी साजिश का शिकार होने से बचाया जा सकेगा। संभव है कि इस देशी मॉड्यूल को पाक पोषित किसी बड़े आतंकी संगठन की शह मिली हो। बहरहाल, दिल्ली में मेट्रो स्टेशन के पास हुए धमाके ने सुरक्षा एजेंसियों को विशेष सतर्कता बरतने का सबक जरूर दिया है। गृह मंत्रालय व एनआई, एफएसएल, एनआईए, एनएसजी आदि विभिन्न एजेंसियों की सक्रियता बता रही है कि सरकार घटना को गंभीरता से ले रही है। विश्वास करें कि सुरक्षा एजेंसियां धमाके करने वालों तक पहुंचने में शीघ्र कामयाब हो सकेंगी।

अंतरिक्ष में भारतीय संचार का नया सितारा सीएमएस-03

> “इसरो के इस मिशन की सबसे बड़ी सफलता यह है कि यह भारत को भारी उपग्रह प्रक्षेपण में पूर्ण आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करता है। इससे पहले इसरो को अपने भारी उपग्रहों के लिए विदेशी लॉन्च सेवाओं का सहारा लेना पड़ता था, जैसे कि दिसंबर 2018 में जीएसएटी-11 को फ्रैंच गयाना से एरिएन-5 रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित किया गया था।

पिछले दिनों श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से 'बाहुबली' रॉकेट एलवीएम3-एम5 ने भारत के अब तक के सबसे भारी संचार उपग्रह सीएमएस-03 को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में पहुंचाया और उसी के साथ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक बार फिर इतिहास रच दिया। यह प्रक्षेपण न केवल भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक नई छलांग है बल्कि यह उस आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी है, जिसकी परिकल्पना आज का भारत अपने वैज्ञानिक संकल्प से साकार कर रहा है। करीब 4,410 किलोग्राम वजनी सीएमएस-03 उपग्रह को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट (जीटीओ) में स्थापित किया गया है। यह भारत की धरती से अब तक छोड़ा गया सबसे भारी संचार उपग्रह है। यह उपग्रह भारत तथा आसपास के समुद्री क्षेत्रों में मल्टी-बैंड संचार सेवाएं प्रदान करेगा और अगले 15 वर्षों तक देश की संचार प्रणाली की रीढ़ साबित होगा। इस मिशन की सफलता ने एक बार फिर इसरो की वैज्ञानिक दक्षता, तकनीकी परिपक्वता और अडिग संकल्प का प्रमाण दिया है। 'बाहुबली' नाम अपने आप में इस रॉकेट की क्षमता का परिचायक है। एलवीएम3 (लॉन्च व्हीकल मार्क-3) इसरो का सबसे शक्तिशाली प्रक्षेपण यान है, जो लगभग 43.5 मीटर ऊंचा और तीन चरणों में कार्य करने वाला रॉकेट है। इसकी भार वहन क्षमता ही इसे 'बाहुबली' का दर्जा देती है। यह रॉकेट लगभग 4,000 किलोग्राम वजन तक के उपग्रहों को जीटीओ में और 8,000 किलोग्राम तक के उपग्रहों को पृथ्वी की निम्न कक्षा (लो अर्थ ऑर्बिट) तक पहुंचाने में सक्षम है। यह वही रॉकेट है, जिसने भारत को विश्व पटल पर गौरव दिलाने वाला ऐतिहासिक चंद्रयान-3 मिशन लॉन्च किया था, जिसने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत का झंडा लहराया।

एलवीएम3-एम5 रॉकेट तीन चरणों में कार्य करता है। पहले चरण में इसके दो ठोस बूस्टर रॉकेट एस-200 प्रारंभिक लिफ्ट ऑफ के लिए भारी थ्रस्ट उत्पन्न करते हैं। दूसरे चरण में एल-110 लिक्विड प्रोपल्शन स्टेज आता है, जिसे विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में विकसित किया गया है। तीसरे और अंतिम चरण में क्रायोजेनिक इंजन सी-25 कार्य करता है, जो सैटेलाइट को सटीक रूप से उसकी कक्षा में स्थापित करने की अंतिम जिम्मेदारी निभाता है। यह जटिल प्रणाली और उसकी सटीक कार्यप्रणाली भारत की उस इंजीनियरिंग दक्षता की परिचायक है, जिसने आज विश्व की शीर्ष चार अंतरिक्ष शक्तियों में भारत को स्थापित किया है।

इसरो के इस मिशन की सबसे बड़ी सफलता यह है कि यह भारत को भारी उपग्रह प्रक्षेपण में पूर्ण आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करता है। इससे पहले इसरो को अपने भारी उपग्रहों के लिए विदेशी लॉन्च सेवाओं का सहारा लेना पड़ता था, जैसे कि दिसंबर 2018 में जीएसएटी-11 को फ्रैंच गयाना से एरिएन-5 रॉकेट द्वारा प्रक्षेपित किया गया था। उस समय जीएसएटी-11 (5854 किलोग्राम) इसरो का सबसे भारी उपग्रह था परंतु वह भारत से लॉन्च नहीं हो सका था। आज सीएमएस-03 के सफल प्रक्षेपण के साथ भारत ने यह उपलब्धि अपने दम पर हासिल कर ली है। सीएमएस-03 को इसरो के वैज्ञानिकों ने आधुनिक संचार अवसंरचना की बढ़ती आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया है। यह एक मल्टी-बैंड कम्युनिकेशन सैटेलाइट है, जो देश के दूरस्थ और समुद्री इलाकों में तेज और विश्वसनीय संचार सेवाएं सुनिश्चित करेगा। इस उपग्रह के माध्यम से रक्षा क्षेत्र, नौसेना, आपदा प्रबंधन, नागरिक संचार और डिजिटल कनेक्टिविटी में क्रांतिकारी सुधार होगा। विशेष रूप से यह नौसेना के लिए समुद्री क्षेत्रों में सुरक्षित और निर्बाध संचार नेटवर्क प्रदान करेगा, जिससे भारत की समुद्री सुरक्षा क्षमताएं कई गुना बढ़ जाएंगी। भारत की समुद्री सीमाएं लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी हैं और उसके पास व्यापक आर्थिक क्षेत्र है। ऐसे में सुदूर समुद्री इलाकों में संचार का सशक्त नेटवर्क आवश्यक है। सीएमएस-03 इस दिशा में एक बड़ा कदम है, जो भारतीय नौसेना को रणनीतिक रूप से अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर बनाएगा। इसके अलावा, यह देश के ग्रामीण और दूरदराज़ इलाकों में डिजिटल पहुंच को भी सुदृढ़ करेगा।

एलवीएम3-एम5 मिशन की सफलता इस बात का भी प्रमाण है कि भारत अब न केवल वैज्ञानिक तकनीक का उपभोक्ता देश है बल्कि वह तकनीक निर्माता और नवोन्मेषी शक्ति के रूप में भी उभर चुका है। इसरो के वैज्ञानिकों ने खराब मौसम की चुनौतियों और अत्यधिक जटिल तकनीकी परिस्थितियों में भी इस मिशन को सफलता तक पहुंचाया। इसरो प्रमुख वी. नारायणन के शब्दों में, 'यह बाहुबली रॉकेट की ताकत का एक और प्रमाण है। उपग्रह को सटीक रूप से कक्षा में स्थापित किया गया है और यह हमारे वैज्ञानिकों की अथक मेहनत का परिणाम है।'

एलवीएम3-एम5 रॉकेट की अब तक की सभी आठ उड़ानें 100 प्रतिशत सफल रही हैं। यह सफलता दर किसी भी विकसित अंतरिक्ष एजेंसी के मानकों पर श्रेष्ठ मानी जा सकती है। भारत के लिए यह मिशन केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं है बल्कि यह उस दृष्टि का विस्तार है, जो प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत 2047' के संकल्प से जुड़ी है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने हाल के वर्षों में जो प्रगति की है, उसने न केवल विश्व को चकित किया है बल्कि निजी उद्योगों और स्टार्टअप्स के लिए भी अंतरिक्ष तकनीक में नए अवसर खोले हैं। सीएमएस-03 मिशन भारत की उस अंतरिक्ष नीति को भी मजबूत करता है, जिसके तहत देश आने वाले वर्षों में वाणिज्यिक प्रक्षेपण सेवाओं का प्रमुख केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। भारत अब वैश्विक स्तर पर उन चुनिंदा देशों में शामिल हो गया है, जो भारी उपग्रहों को स्वयं की तकनीक से अंतरिक्ष में भेजने में सक्षम हैं। इससे न केवल विदेशी मुद्रा की बचत होगी बल्कि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की वैश्विक विश्वसनीयता भी बढ़ेगी। इसरो के मिशनों की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उसने हर उपलब्धि सीमित बजट में हासिल की है। एलवीएम3 की संरचना और प्रदर्शन का स्तर यूरोपियन एरिएन-5 या अमेरिकी फाल्कन-9 जैसी श्रेणी के रॉकेटों के समान है जबकि इसकी लागत उन मिशनों की तुलना में बेहद कम है। यही भारतीय प्रतिभा और वैज्ञानिक अनुशासन की असली पहचान है। इस मिशन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि सीएमएस-03 से भारत की डिजिटल कनेक्टिविटी और रक्षा नेटवर्क दोनों को मजबूती मिलेगी। देश के सुदूरवर्ती द्वीपों, सीमांत इलाकों और समुद्री मार्गों पर निर्बाध संचार स्थापित करना अब अधिक आसान होगा। इस मिशन के जरिए भारत का संचार तंत्र और आपदा प्रबंधन प्रणाली भी अधिक सटीक और प्रभावी होगी। यह उपलब्धि भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आज जब विश्व अंतरिक्ष की नई प्रतिस्पर्धा में प्रवेश कर चुका है, जहां अमेरिका, रूस, चीन और यूरोप अपनी तकनीकी श्रेष्ठता सिद्ध करने की होड़ में हैं, भारत ने शांत, दृढ़ और सटीक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनी अलग पहचान बनाई है। चंद्रयान-3 के बाद 'बाहुबली' की यह सफलता भारत की उसी निरंतर प्रगति का प्रतीक है, जिसने विज्ञान को राष्ट्रीय गौरव से जोड़ा है। कुल मिलाकर, भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम अब केवल खोज का नहीं बल्कि सशक्त राष्ट्र निर्माण का माध्यम बन चुका है। सीएमएस-03 केवल एक उपग्रह नहीं बल्कि भारत की तकनीकी क्षमता, आत्मविश्वास और दूरदृष्टि का प्रतीक है। यह उस युग का उद्घोष है, जिसमें भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में नेतृत्व की भूमिका निभाने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। इसरो के वैज्ञानिकों ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की प्रतिभा, अनुशासन और धैर्य का कोई विकल्प नहीं। 'बाहुबली' की यह उड़ान आने वाले दशकों तक भारतीय विज्ञान की उपलब्धियों में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी। यह केवल एक प्रक्षेपण नहीं बल्कि भारत की उस उड़ान का प्रतीक है, जो अपनी शक्ति, अपनी तकनीक और अपने संकल्प के बल पर सीमाओं से परे अंतरिक्ष तक पहुंच चुकी है। निश्चय ही 'बाहुबली' की यह उड़ान भारत की अंतरिक्ष यात्रा के स्वर्ण युग की शुरुआत है, जहां सीमाएं नहीं, केवल ऊंचाईयां हैं।

प्रेरणा

गौतम बुद्ध और दंभी जमींदार की कथा — अहंकार से आत्मज्ञान तक का उजाला

प्राचीन भारत का वह समय था जब राजगृह की धरती पर सुख और समृद्धि के साथ-साथ अहंकार का विष भी फैल चुका था। राजाओं और जमींदारों के बीच अपने वैभव का प्रदर्शन एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा बन चुका था। उसी नगर में एक अत्यंत संपन्न जमींदार रहता था, जिसके पास असंख्य खेत, अन्नागार, सोने-चाँदी के आभूषण, हाथी-घोड़े और सैकड़ों नौकर थे। उसका नाम अमरसेन था। नगर में शायद ही कोई व्यक्ति हो जो उसकी संपत्ति की बराबरी कर सके। लेकिन जितना बड़ा उसका वैभव था, उतना ही गहरा उसका अभिमान था। उसे विश्वास था कि संसार में धन ही सबसे बड़ा बल है, और गरीब मनुष्य केवल उसके चरणों की धूल मात्र हैं। वह स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता, और जब कोई निर्धन व्यक्ति उससे मिलने आता, तो उसे दरवाज़े पर ही रोक देता।

एक दिन नगर में चर्चा फैल गई कि महात्मा गौतम बुद्ध राजगृह के उपवन में पधारे हैं। लोग कहते थे कि उनके उपदेश सुनकर सबसे क्रूर व्यक्ति भी करुणामय बन जाता है। कोई उन्हें "जगज्ज्योति" कहता, कोई "तथागत", तो कोई "ज्ञान के सागर"। लेकिन अमरसेन के मन में श्रद्धा नहीं, बल्कि जिज्ञासा और चुनौती का भाव पैदा हुआ। उसने मन ही मन कहा—"चलो, देखते हैं, यह संन्यासी अपने उपदेशों से क्या कर दिखाता है। क्या वह मेरे जैसे धनी और प्रभावशाली व्यक्ति को कुछ सिखा भी सकता है?"

दूसरे ही दिन सुबह उसने अपने सबसे सुंदर वस्त्र पहने, सोने की जंजीरें और रत्नों से जड़ी अंगूठियाँ डालीं, और अपने शानदार रथ पर सवार हुआ। चार घोड़े, नौकरों की कतार, और पीछे चलते अंगरक्षक—पूरा नगर उसके इस गर्वपूर्ण प्रस्थान को देखने लगा। लोग बोले, "अमरसेन आज स्वयं बुद्ध से मिलने जा रहा है, अब देखना क्या परिणाम होता है।"

जब वह बुद्ध के आश्रम पहुँचा, तो उसे देखकर वहाँ के भिक्षु शांत भाव से खड़े हो गए। सबने प्रणाम किया, लेकिन बुद्ध ने कोई औपचारिक स्वागत नहीं किया। वे शांत भाव से एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। उनके चेहरे पर एक अद्भुत शांति थी—ऐसी शांति, जिसे देखकर मन का सारा कोलाहल थम जाए। अमरसेन ने सामने जाकर कहा, "भिक्षु, मैंने सुना है तुम बहुत ज्ञानी हो। लोग कहते हैं कि तुम्हारे उपदेश से मनुष्य का जीवन बदल जाता है। पर मैं देख रहा हूँ, तुम्हारे पास न धन है, न वैभव। ऐसे में तुम इस संसार की सच्चाई क्या समझ सकते हो?"

बुद्ध ने उसकी ओर देखा, मुस्कुराए और बोले, "आओ, भीतर चलो।" वे दोनों एक छोटे कक्ष में पहुँचे। भीतर हल्का अंधकार था। बुद्ध ने अपने शिष्य से कहा कि द्वार बंद कर दो। फिर वे बोले, "भद्र पुरुष, क्या मैं तुम्हारी वह अंगूठी देख सकता हूँ जो तुम्हारे हाथ में इतनी चमक रही है?"

अमरसेन ने गर्व से कहा, "यह अंगूठी सत्रह रत्नों से बनी है, जो मुझे काशी के राजा ने उपहार में दी थी।" उसने अंगूठी उतारी और बुद्ध को थमा दी। बुद्ध ने वह अंगूठी हाथ में ली, और बिना कुछ कहे अचानक फर्श पर गिरा दी। अंगूठी फर्श पर लुढ़कती हुई कहीं अंधेरे में खो गई।

अमरसेन चौंक गया। उसका चेहरा तमतमा उठा। वह झुककर खोजने लगा, पर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह घबराकर बोला, "तुम्हें पता है यह कितनी कीमती है? मैं इसे यूँ ही खो नहीं सकता!" बुद्ध ने शांत स्वर में कहा, "तो प्रकाश करो। अंधेरे में कुछ नहीं दिखेगा।"

अमरसेन ने तुरंत अपने सेवक को बुलाया और कहा, "जल्दी करो, आग लाओ, दीपक जलाओ।" थोड़ी देर में पत्थर रगड़कर आग निकाली गई और दीप जलाया गया। रोशनी फैलते ही फर्श के एक कोने में अंगूठी की चमक दिखाई दी। वह दौड़कर वहाँ गया और अंगूठी उठा ली। उसके चेहरे पर राहत की झलक आई।

बुद्ध ने कहा, "अब बताओ, तुम्हारी कीमती अंगूठी किसके कारण तुम्हें वापस मिली?" अमरसेन ने उत्तर दिया, "इस पत्थर की वजह से, जिसने आग उत्पन्न की।" बुद्ध मुस्कुराए, "तो क्या यह साधारण पत्थर तुमसे अधिक मूल्यवान हुआ? क्योंकि इसने तुम्हारी कीमती वस्तु को तुम्हें वापस दिलाया।"

अमरसेन चुप हो गया। बुद्ध ने आगे कहा, "यह संसार भी ऐसा ही है। तुम स्वयं को रत्न समझते हो और दूसरों को पत्थर। पर जब अंधकार छा जाता है, तब वही पत्थर प्रकाश लाता है। वही सामान्य जन, जिन्हें तुम तुच्छ समझते हो, समाज में प्रकाश का कारण बनते हैं। किसान खेत में हल चलाता है, तभी तुम्हारे घर में अन्न पकता है। कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है, तभी तुम्हें जल मिलता है। मजदूर पसीना बहाता है, तभी तुम्हारे महल खड़े रहते हैं। यदि ये सब न हों, तो तुम्हारे रत्नों का कोई अर्थ नहीं। रत्न तभी चमकता है जब उसके आसपास प्रकाश हो—और प्रकाश वही जलाता है, जिसे तुम नगण्य मानते हो।"

बुद्ध के ये शब्द बिजली की तरह अमरसेन के मन में उतर गए। उसका चेहरा झुक गया। उसकी आँखें भर आईं। उसने कांपती आवाज़ में कहा, "भगवान, आज तक मैं अंधकार में जी रहा था। मैंने धन को ही सब कुछ समझ लिया था, पर आज मुझे समझ आया कि सच्ची कीमत तो दूसरों के प्रति सम्मान में है। मैं वचन देता हूँ कि अब से किसी को नीचा नहीं समझूँगा।"

उस दिन से उसका जीवन पूर्णतः बदल गया। उसने अपने खेतों में मजदूरों को बराबर का अधिकार दिया। उसने गाँव में एक सभा स्थापित की, जहाँ हर व्यक्ति, चाहे वह गरीब हो या अमीर, एक साथ बैठता और भोजन करता। उसके घर में अब पहले जैसी कठोरता नहीं रही। वहाँ करुणा, सहानुभूति और प्रेम का वातावरण फैल गया।

वर्षों बाद जब लोग उसके जीवन की चर्चा करते, तो कहा करते, "वह जमींदार जिसने कभी गरीब को अपने दरवाज़े तक नहीं आने दिया, आज उनके बीच बैठकर रोटी बाँटता है।"

गौतम बुद्ध की यह कथा हमें यही सिखाती है कि अहंकार सबसे गहरा अंधकार है। जो व्यक्ति दूसरों को तुच्छ समझता है, वह स्वयं अपने भीतर का प्रकाश खो देता है। और जो विनम्र बनता है, वह संसार का सबसे उजला दीप बन जाता है।

धन से शक्ति मिलती है, पर करुणा से प्रकाश मिलता है — और जब यह दोनों मिल जाते हैं, तब मनुष्य दंभी नहीं, दयालु बन जाता है, और उसी क्षण वह अंधकार से उजाले की ओर बढ़ जाता है।

बैंकों से बेहतर है सहकारी नेटवर्क, बेहतर बदलाव की पहल

बढ़ई, कुम्हार, सुनार और दर्जी आदि 18 पारंपरिक पेशे से जुड़े लोगों के लिए प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना एक नई उम्मीद लेकर आई थी। इसके तहत इन्हें कौशल प्रशिक्षण, आधुनिक औजार और बिना जमानत के छोटा ऋण देने का प्रविधान है, ताकि वे आज की तकनीकी दुनिया में फिर से खड़े हो सकें। सितंबर 2023 में 13,000 करोड़ रुपये के बजट के साथ शुरू हुई इस योजना का लक्ष्य देश के ग्रामीण जीवन से संबंधित पारंपरिक पेशे थे।

दो साल बाद कागज पर तो आंकड़े उत्साहजनक दिखते हैं, क्योंकि इस योजना के तहत तीन करोड़ से ज्यादा पंजीकरण हुए हैं, पर सच्चाई कुछ और है। अब तक सिर्फ 4.65 लाख कारीगरों को 4,000 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत हुए हैं, जिनमें 2,200 करोड़ रुपये ही वास्तव में वितरित हुए और मात्र 224 करोड़ रुपये की वापसी हुई है। पंजीकरण और वास्तविक कर्ज वितरण के बीच यह फासला सिर्फ प्रशासनिक नहीं, बल्कि संरचनात्मक कमी दर्शाता है। यह बताता है कि भारत में आर्थिक कल्याणकारी योजनाओं का सबसे बड़ा रोड़ा बैंकिंग व्यवस्था ही है। निजी बैंक सरकार का विरोध नहीं कर रहे, बस नियमों का चतुराई से पालन कर रहे हैं। आरबीआइ ने सभी बैंकों को आदेश दिया है कि वे अपनी कुल ऋण पुस्तिका का 40 प्रतिशत कृषि, लघु उद्योग क्षेत्र के साथ कमजोर वर्गों को दें। निजी बैंक प्राथमिकता क्षेत्र के लिए निर्धारित ऋण लक्ष्य को पूरा करने के बजाय प्राथमिकता क्षेत्र ऋण प्रमाणपत्र खरीद लेते हैं। ये प्रमाणपत्र वे उन सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से खरीद सकते हैं, जिन्होंने अपने लक्ष्य से अधिक ऋण वितरित किया हो।

कुछ बैंक अपने दायित्व को गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों या माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के माध्यम से पूरा करने का दावा करते हैं। कागज पर वे नियम पूरा करते हैं, लेकिन हकीकत में विश्वकर्मा ऋण देने के मामले में निजी बैंकों का रिकार्ड निराशाजनक है। पीएम जन धन योजना में भी निजी बैंकों की हिस्सेदारी मुश्किल से तीन प्रतिशत है। निजी बैंकों का तर्क है कि दो लाख रुपये का एक छोटे कारीगर को दिया गया ऋण उतने ही कागजी काम और लागत मांगता है, जितना 20 लाख का कार लोन, पर मुनाफा बहुत कम।

कारीगरों के पास न जमानत होती है, न डिजिटल ऋण इतिहास, जिससे जोखिम बढ़ जाता है। सरकारी गारंटी भी केवल आंशिक नुकसान कवर करती है। ऐसे में शेयरधारकों से संचालित संस्थानों के लिए यह काम आकर्षक नहीं है। इसके उलट सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक लगभग पूरा बोझ उठाते हैं-चाहे जन धन, मुद्रा या विश्वकर्मा जैसी योजनाएं हों, लेकिन सीमित स्टाफ और सख्त नियामक बोझ के कारण उनकी क्षमता सीमित है। जब कर्ज अटकता है तो जनता के सामने दोष बैंक या सरकार, दोनों को झेलना पड़ता है।

जब निजी बैंक पीछे हट रहे हों और सार्वजनिक बैंक थक चुके हों, तो समाधान सहकारिता ढांचे में है। यह भारत की सबसे पुरानी और भरोसेमंद वित्तीय व्यवस्था है। सहकारी ऋण समितियां और जिला सहकारी बैंक 'सामाजिक गारंटी' पर काम करते हैं, जहां हर सदस्य की गारंटी दूसरा सदस्य देता है। यह सामुदायिक भरोसा उन कारीगरों के लिए अधिक उपयोगी है, जिनके पास औपचारिक रिकार्ड नहीं है। इन संस्थाओं में डिफाल्ट दर औसतन दो प्रतिशत के आसपास रहती है, जो अधिकांश सूक्ष्म ऋणों से बेहतर है।

कई राज्यों में सहकारी संस्थाएं डेरी, हैंडलूम और ग्रामीण उद्यमों में गहराई से जुड़ी हैं। उन्हें स्थानीय व्यापार और मौसमी आय का अनुभव है। एक कुम्हार या बढ़ई भले फिनटेक न समझे, सहकारी संस्था को समझता है। यदि विश्वकर्मा योजना को इन सहकारी नेटवर्क से जोड़ा जाए तो यह योजना वास्तव में जन-संचालित बन सकती है, जैसे उत्तर प्रदेश के बुनकर समाज या गुजरात की डेरी सहकारिताओं में हुआ है।

सरकार को चाहिए कि सहकारी और जिला केंद्रीय बैंकों को निर्धारित बैंकों की तुलना में बेहतर ऋण गारंटी दे, क्योंकि इनका सामाजिक आधार अधिक गहरा है। नाबार्ड या सिडबी के माध्यम से कारीगर ऋणों के लिए पुनर्वित्त सुविधा खोली जा सकती है। प्राथमिक कृषि ऋण समितियों का डिजिटलीकरण 80 प्रतिशत पूरा हो चुका है। इन्हें भी सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाए। जो सहकारिताएं ऋण वितरण और वसूली में अच्छा प्रदर्शन करें, उन्हें ब्याज सब्सिडी या प्रशासनिक सहायता दी जा सकती है। सरकार एनईएफटी/आरटीजीएस शुल्क, केवाईसी सत्यापन और क्रेडिट ब्यूरो फीस जैसी छोटी, पर बार-बार आने वाली लागतें भी सहकारिताओं के लिए माफ कर सकती है। एक विशेष कोष बनाकर उन सहकारिताओं के प्रशासनिक खर्च का कुछ हिस्सा वापस किया जा सकता है, जो वित्तीय समावेशन के लक्ष्य पूरे करती हैं। यह सच है कि कई सहकारी संस्थाएं पूंजी की कमी, कमजोर प्रबंधन या डिजिटलीकरण की कमी से जूझ रही हैं, पर इन्हें सुधारा जा सकता है।

पारदर्शी आडिट, पदाधिकारियों का रोटेशन एवं सरकार से कार्यशील पूंजी सहयोग जैसी पहलें भरोसा बहाल कर सकती हैं। प्रशिक्षण शिविर सहकारिता प्रबंधन में ईमानदारी और दक्षता बढ़ाएंगे। असली वित्तीय समावेश तभी होगा हम जब उन संस्थाओं को मजबूत करें, जो अपने लोगों को जानती हैं, क्योंकि क्रेडिट केवल पूंजी नहीं, भरोसा भी है।

अभियान

भक्त प्रह्लाद की पुकार पर प्रकट हुए भगवान नरसिंह और दैत्यराज बलि के गर्व को तोड़ने वाले वामनदेव

सृष्टि के आरंभ से ही जब-जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ा, जब-जब असुरों का अत्याचार धर्म और सत्य को डूबाने लगा, तब-तब भगवान श्रीहरि विष्णु ने अपने भक्तों की रक्षा और संतुलन की स्थापना के लिए अवतार लिया। उनके प्रत्येक अवतार का एक ही उद्देश्य रहा — सत्य की रक्षा और अहंकार का अंत। भगवान के प्रत्येक रूप में भक्ति, करुणा और न्याय की झलक मिलती है। ऐसे ही दो अद्भुत और रहस्यमय अवतारों की कथा है — नरसिंह अवतार और वामन अवतार की, जिनमें भगवान ने एक ओर भक्त प्रह्लाद को अभय दिया, तो दूसरी ओर दैत्यराज बलि के गर्व को विनम्रता में बदल दिया।

बहुत प्राचीन काल में ऋषि कश्यप और उनकी पत्नी दिति के दो पुत्र हुए — हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप। ये दोनों अत्यंत बलवान और तेजस्वी असुर थे। हिरण्याक्ष ने अपनी शक्ति के घमंड में आकर पृथ्वी को पाताल लोक में डुबा दिया था। तब भगवान विष्णु ने वराह रूप धारण कर पृथ्वी को समुद्र से बाहर निकाला और हिरण्याक्ष का वध किया। अपने भाई की मृत्यु से हिरण्यकश्यप का हृदय क्रोध से भर गया। उसने प्रतिज्ञा ली कि वह अपने भाई की मृत्यु का बदला अवश्य लेगा। वह हजारों वर्षों तक मंदराचल पर्वत पर खड़े होकर घोर तपस्या करने लगा। उसकी तपस्या से तीनों लोक कंपित हो उठे। अंततः ब्रह्माजी प्रकट हुए और बोले, "वर मांगो, हे असुरराज।" हिरण्यकश्यप ने धूर्तता से वरदान माँगा कि न वह दिन में मरे, न रात में; न धरती पर, न आकाश में; न मनुष्य से, न पशु से; न अस्त्र से, न शस्त्र से, और न घर के भीतर, न बाहर।

ब्रह्मा जी का वरदान पाकर हिरण्यकश्यप का अहंकार सातवें आकाश तक पहुँच गया। उसने देवताओं को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। उसके शासन में किसी को भगवान का नाम लेने की अनुमति नहीं थी। सबको आदेश था कि केवल हिरण्यकश्यप की ही पूजा की जाए। जो उसके आदेश का उल्लंघन करता, उसे दंड दिया जाता। उसके अत्याचार की सीमा तब और बढ़ी जब उसने अपने ही पुत्र प्रह्लाद को भी इस अंधकारमय अधर्म में शामिल करने की कोशिश की।

परंतु प्रह्लाद अपने पिता से बिल्कुल भिन्न था। वह बचपन से ही भगवान विष्णु का परम भक्त था। उसका मन सदा "ॐ नमो नारायणाय" के जप में लीन रहता था। हिरण्यकश्यप के लिए यह असहनीय था कि उसका पुत्र उस विष्णु की आराधना करे जिसने उसके भाई का वध किया था। उसने कई बार प्रह्लाद को मारने का प्रयास किया — कभी विष पिलाया, कभी हाथियों के पैरों तले कुचलवाने की कोशिश की, कभी आग में बैठाया, परंतु हर बार भगवान विष्णु ने किसी न किसी रूप में अपने भक्त की रक्षा की।

आखिरकार जब हिरण्यकश्यप का क्रोध अपनी सीमा पार कर गया, तो उसने प्रह्लाद से पूछा, "कहाँ है तेरा विष्णु? क्या वह तेरी रक्षा करने आएगा?" प्रह्लाद ने शांत स्वर में कहा, "पिता, वह सर्वत्र हैं — हवा में, जल में, पत्थर में, मेरे हृदय में और इस स्तंभ में भी।" यह सुनकर हिरण्यकश्यप हँसा और गर्जना करते हुए बोला, "क्या इस स्तंभ में है तेरा विष्णु?" उसने गदा उठाई और स्तंभ पर प्रहार किया।

क्षण भर में स्तंभ फट पड़ा, और उसमें से एक भयानक गर्जना गूँज उठी — वह गर्जना जिसने ब्रह्मांड के कोने-कोने को हिला दिया। उस स्तंभ से प्रकट हुए भगवान नरसिंह — आधे सिंह और आधे मानव के रूप में। उनकी आँखों में अग्नि की ज्वाला थी और उनके नखों से दिव्य प्रकाश फूट रहा था। उन्होंने हिरण्यकश्यप को दरवाजे की चौखट पर, जो न घर के भीतर थी न बाहर, अपने जंघाओं पर रख लिया और अपने तेज नखों से उसका वक्ष फाड़ दिया। यह दिन और रात के बीच का समय था — संध्या। इस प्रकार न दिन था न रात, न मनुष्य था न पशु, न अस्त्र था न शस्त्र, और न घर के भीतर न बाहर — ब्रह्मा के वरदान का रहस्य पूर्ण हुआ और अधर्म का अंत हो गया।

भक्त प्रह्लाद ने अपने प्रभु के उस उग्र रूप को देख आँसुओं में स्नान कर लिया और कहा, "प्रभु, आप मेरे रक्षक हैं। आपके चरणों में ही सारा विश्व सुरक्षित है।" नरसिंह भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि सच्चे भक्त के लिए भगवान सदैव साक्षात उपस्थित रहते हैं।

कथाओं का प्रवाह यहीं समाप्त नहीं होता। त्रेतायुग में फिर से असुरों का प्रभाव बढ़ा। दैत्यराज बलि, जो अपने पराक्रम और बल से तीनों लोकों का स्वामी बन चुका था, धर्म से भटक गया। उसके अंदर दानशीलता थी, पर साथ ही गर्व भी। देवता पराजित होकर स्वर्ग से वंचित हो गए। वे सब ब्रह्मा और इंद्र के साथ भगवान विष्णु के पास गए और कहा, "प्रभु, हमारे लोक असुर बलि के अधीन चले गए हैं। वह आपका भक्त है, पर अहंकार में अंधा हो गया है।"

भगवान विष्णु ने मुस्कुराकर कहा, "मैं उसका अहंकार दूर करूँगा, पर दया से, युद्ध से नहीं।" और उन्होंने वामन रूप धारण करने का संकल्प लिया — एक छोटे से ब्राह्मण बालक का। भाद्रपद मास की द्वादशी तिथि को मां अदिति के गर्भ से ऋषि कश्यप के पुत्र के रूप में उन्होंने जन्म लिया। यह था वामन अवतार — भगवान का पाँचवाँ अवतार।

जब वामन ब्रह्मचारी के रूप में राजा बलि के यज्ञ में पहुँचे, तो सब लोग उस तेजस्वी बालक को देखकर मुग्ध रह गए। उनके एक हाथ में कमंडलु, दूसरे में छाता और चरणों में पवित्र प्रभा थी। वामन ने विनम्र स्वर में कहा, "हे राजन्, मैं आपसे केवल तीन पग भूमि चाहता हूँ।" राजा बलि हँसकर बोले, "हे बालक, मैं आपको तीन लोक भी दे सकता हूँ, आप तो केवल तीन पग मांगते हैं?"

गुरु शुक्राचार्य ने चेताया, "राजन, यह कोई साधारण बालक नहीं, स्वयं विष्णु हैं। ये तुम्हारा अहंकार तोड़ने आए हैं। सावधान रहो।" पर बलि ने कहा, "जिसे मैं दान दे चुका, उससे पीछे नहीं हटता। भले ही यह स्वयं भगवान हों, मैं अपना वचन नहीं तोड़ूँगा।"

वामन ने मुस्कुराकर दान स्वीकार किया, और उसी क्षण उनका शरीर बढ़ने लगा। उनका सिर बादलों को छू गया, उनकी आँखों में सूर्य चमक उठा, और पाँवों की गति से पृथ्वी काँप उठी। एक पग में उन्होंने संपूर्ण पृथ्वी नाप ली, दूसरे पग में आकाश और स्वर्ग लोक। जब तीसरे पग की बारी आई, तो कहीं स्थान नहीं बचा। राजा बलि ने सिर झुका दिया और कहा, "प्रभु, तीसरा पग मेरे सिर पर रख दीजिए।"

भगवान वामन ने अपना पग उसके सिर पर रखा और उसे पाताल लोक भेज दिया। लेकिन उन्होंने उसे श्राप नहीं, आशीर्वाद दिया। बोले, "राजन, तुम्हारी वचनबद्धता ने मुझे प्रसन्न किया है। तुम पाताल लोक के राजा बनो, और मैं स्वयं तुम्हारे द्वार पर तुम्हारी रक्षा हेतु उपस्थित रहूँगा।"

कहते हैं कि आज भी भगवान वामन, राजा बलि के द्वार पर पहरा देते हैं, ताकि कोई उसकी प्रतिज्ञा को भंग न करे।

इन दोनों कथाओं में एक गहरी शिक्षा छिपी है — भक्ति और विनम्रता में ही ईश्वर का वास है। जब भक्त सच्चे मन से पुकारता है, तो भगवान स्वयं रूप बदलकर उसकी रक्षा करते हैं, और जब कोई अहंकार में अंधा हो जाता है, तो वही भगवान उसे विनम्रता का पाठ पढ़ाते हैं। नरसिंह ने अधर्म का अंत कर भक्त को सुरक्षा दी, और वामनदेव ने शक्ति के मद में चूर राजा को दया और त्याग का मार्ग दिखाया। यही सृष्टि का नियम है — जब भी अन्याय बढ़ेगा, भगवान अपने किसी न किसी रूप में पृथ्वी पर अवतरित होकर धर्म की स्थापना अवश्य करेंगे।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल माणसा के सोजा गांव में आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में शामिल हुए

सोजा गांव एकता के बल पर प्रधानमंत्री के 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को साकार कर रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- देवी भागवत कथा का श्रवण करने से माता के स्वरूपों और पराक्रमों के ज्ञान के साथ-साथ समाज में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना को बल मिलता है
- सोजा गांव स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर आदर्श गांव बने

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार को गांधीनगर जिले की माणसा तहसील के सोजा गांव में आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' का कार्यमंत्र सोजा गांव में श्री वीर वेलुड़ा सेवा मंडल द्वारा अर्धशताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में साकार हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वीर वेलुड़ा महाराज ने अपने प्राण का बलिदान देकर सोजा गांव की रक्षा की थी। आज सोजा गांव के श्री वीर वेलुड़ा सेवा मंडल के हर उम्र, हर जाति और हर वर्ग के लोग कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक समरसता का कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि एकता के बल पर सोजा गांव प्रधानमंत्री के 'विकास भी, विरासत भी' मंत्र को साकार कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जिस प्रकार से काशी, उज्जैन, अयोध्या और सोमनाथ में विकास को विरासत के साथ जोड़ा है, उसी प्रकार सोजा गांव भी विकास और विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस अर्धशताब्दी महोत्सव को और अधिक पवित्र बनाने के लिए श्रीमद् देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ और शतचंडी महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया है। श्रीमद् देवी भागत पुराण मातृशक्ति का महान ग्रंथ है, जिसमें मां भगवती की महिमा का वर्णन किया गया है।

उन्होंने कहा कि देवी भागवत और शक्ति उपासना के साहित्य में माताजी के अनेक स्वरूप देखने को मिलते हैं। देवी भागवत का श्रवण करने से माता के स्वरूपों और पराक्रमों का ज्ञान मिलता है। साथ ही, शक्ति स्वरूपा माता के महत्व का बोध होने से समाज में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना को भी बल मिलता है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ रहे देश का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने सोजा गांव को स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर आदर्श गांव बनने की प्रेरणा दी।

कथाकार श्री राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री जी ने मुख्यमंत्री को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में सेवा मंडल के कार्यकर्ताओं तथा सरपंच श्रीमती सुशीलाबेन पटेल और मोहनभाई ने मुख्यमंत्री का अभिवादन किया।

पोरबंदर-राजकोट के बीच चलेंगी दो नई पैसेन्जर ट्रेनें

(जीएनएस)। डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केंद्रीय श्रम, रोजगार, युवा मामले और खेल मंत्री, भारत सरकार के प्रयासों से रेलवे बोर्ड ने पोरबंदर-राजकोट के बीच 2 नई ट्रेनों को चलाने हेतु अनुमति प्रदान कर दी है। ये दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

1. राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल ट्रेन (Inaugural Special Train)

ट्रेन नंबर 09561 राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल (Inaugural Special), राजकोट स्टेशन से सुबह 10.30 बजे प्रस्थान करेगी एवं 14.40 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 14 नवम्बर, 2025 (शुक्रवार) को राजकोट स्टेशन से सुबह 10.30 बजे प्रस्थान करेगी।

2. राजकोट-पोरबंदर-राजकोट दैनिक पैसेन्जर ट्रेन

ट्रेन नंबर 59561 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर दैनिक राजकोट स्टेशन से सुबह 8.35 बजे प्रस्थान करेगी एवं 13.15 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59562 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर दैनिक पोरबंदर से 14.30 बजे प्रस्थान करेगी एवं 18.55 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी। ये दोनों ट्रेनें 15.11.2025 से प्रतिदिन नियमित रूप से अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

3. पोरबंदर-राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर ट्रेन (सप्ताह में 5 दिन)

ट्रेन नंबर 59564 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, गुरूवार और रविवार को छोड़कर) पोरबंदर स्टेशन से सुबह 7.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 12.35 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 15.11.2025 से सप्ताह में 5 दिन (गुरूवार और रविवार को छोड़कर) अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59563 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, बुधवार और शनिवार को छोड़कर) राजकोट स्टेशन से दोपहर 14.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 20.30 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 16.11.2025 से सप्ताह में 5 दिन (बुधवार और शनिवार को छोड़कर) अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

उपरोक्त सभी ट्रेनें अपनी यात्रा के दौरान भक्तिनगर, रीबडा, गोंडल, वीरपुर, नवागढ़, जेतलसर, धोराजी, उपलेटा, पानेली मोटी, जाम जोधपुर, बालवा, काटकोला, वांसजालिया और राणावाव स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रूकेंगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त ट्रेनों को चलाने हेतु ट्रेन नंबर 19572 पोरबंदर-राजकोट एक्सप्रेस के समय में परिवर्तन किया जाएगा। यह ट्रेन पोरबंदर से अपने वर्तमान निर्धारित समय 14.35 बजे की बजाय 16.00 बजे प्रस्थान करेगी। इसी प्रकार, राजकोट स्टेशन पर 18.55 बजे की बजाय 21.20 बजे पहुंचेगी।

महिला क्रिकेट विश्व कप की विजेता भारतीय टीम की खिलाड़ी वडोदरा की सुश्री राधा यादव ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से सौजन्य मुलाकात की

(जीएनएस)। गांधीनगर : महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 की विजेता भारतीय टीम की सदस्य वडोदरा की सुश्री राधा यादव ने मंगलवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से सौजन्य मुलाकात की। सुश्री राधा यादव भारतीय टीम में बतौर ऑलराउंडर शामिल की गई थीं। उन्होंने 2018 में दक्षिण अफ्रीका महिला टीम के खिलाफ हुए मुकाबले के दौरान पहली बार भारतीय टीम में अपना स्थान बनाकर 20-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के क्षेत्र में पदार्पण किया था। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सुश्री राधा यादव का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए महिला क्रिकेट विश्व कप में भारतीय महिला टीम के शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। इस अवसर पर महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रीमती मनीषा वकील भी मौजूद रहीं।

गांधीनगर-जयपुर स्टेशन पुनर्विकास कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के गांधीनगर-जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास और बड़े सूतर पर उन्नयन कार्य के मद्देनजर 9 नवंबर से 13 दिसंबर, 2025 तक 35 दिनों का ब्लॉक लिया गया है, जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट/आंशिक रूप से निरस्त होने वाली ट्रेनें:

1. 8 दिसंबर, 2025 को ओखा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20951 ओखा-जयपुर एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 9 दिसंबर, 2025 को जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20952 जयपुर-ओखा एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें:

1. 13 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12215 दिल्ली सराय रोहिल्ला-बांद्रा टर्मिनस गरीब रथ एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।

2. 13 नवंबर, 2025 से 12 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
3. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19416 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
4. 09 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
5. 24 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20938 दिल्ली सराय रोहिल्ला-पोरबंदर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
6. 26 नवंबर, 2025 और 3 दिसंबर, 2025 तक सुल्तानपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20940 सुल्तानपुर-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
7. 29 नवंबर, 2025 और 06 दिसंबर, 2025 को वाराणसी से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20964 वाराणसी-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
8. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को लखनऊ से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19402 लखनऊ-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-साबरमती स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।
9. 25 नवंबर, 2025 को अयोध्या कैंट से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-अहमदाबाद-विरमगाम स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।

19 नवम्बर को भावनगर से तथा 21 नवम्बर को पालीताना से, बान्द्रा टर्मिनस के लिए चलेगी "स्पेशल ट्रेन"

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के लिए भावनगर टर्मिनस से बान्द्रा टर्मिनस, बान्द्रा टर्मिनस से पालीताना, पालीताना से बान्द्रा टर्मिनस और बान्द्रा टर्मिनस से भावनगर टर्मिनस स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर "स्पेशल ट्रेनें" चलाई जाएंगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 09230 भावनगर टर्मिनस-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल बुधवार, 19 नवम्बर, 2025 को भावनगर टर्मिनस से 21:20 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11:20 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन भावनगर परा, सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, सूरत, नवसारी, वलसाढ़, वापी, पालघर एवं बोरीवली स्टेशनों पर रूकेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09229 बांद्रा टर्मिनस-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल गुरूवार, 20 नवम्बर, 2025 को 14:30 बजे बान्द्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 06:00 बजे पालीताना पहुंचेगी। यह ट्रेन बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाढ़, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़ और सिहोर (गुजरात) स्टेशनों पर रूकेगी।

2. ट्रेन संख्या 09232 पालीताना-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल शुक्रवार, 21 नवम्बर, 2025 को पालीताना से 20:00 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 10:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, सूरत, नवसारी, वलसाढ़, वापी, पालघर एवं बोरीवली स्टेशनों पर रूकेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09231 बांद्रा टर्मिनस-भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल शनिवार, 22 नवम्बर, 2025 को 12:45 बजे बान्द्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन प्रातः 04:45 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाढ़, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़, सिहोर (गुजरात) और भावनगर परा स्टेशनों पर रूकेगी।

उपरोक्त सभी ट्रेनों में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर और सेकंड क्लास जनरल कोच होंगे। उपरोक्त सभी ट्रेनों की बुकिंग 13 नवम्बर, 2025 (गुरूवार) से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। सभी ट्रेनों के समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भारत पर्व-2025, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी-एकता नगर : कठपुतली शो की मनमोहक प्रस्तुतियों ने जीता लोगों का दिल

- राजस्थान की परंपरागत कठपुतली कला में नजर आया भारतीय संस्कृति और एकता का प्रतिबिंब
- परंपरा, संदेश और सृजनात्मकता का अनोखा समन्वय : कलाकारों को सरकार की मान्यता और सहयोग मिला
- कठपुतली कला के माध्यम से लोगों को आनंद भी मिलता है और सरकार के संदेश भी आसानी से समझ पाते हैं : पवनभाई भाट, कलाकार
- भारत पर्व-2025 के मंच से हम जैसे छोटे कलाकारों को एक बड़ा प्लेटफॉर्म मिला है, इसके लिए हम सरकार के आभारी हैं : कठपुतली कलाकार

(जीएनएस)। गांधीनगर : 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के ध्येय को जीवंत बना रहे भारत पर्व-2025 में लोक कला और आधुनिक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला है। एकता नगर के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में चल रहे भारत-पर्व के अंतर्गत राजस्थान की कठपुतली कला ने सभी का मन जीत लिया है। रंग-बिरंगी वेशभूषा, परंपरागत संगीत और जीवंत पात्रों द्वारा जीवन के प्रसंगों की अभिव्यक्ति के शानदार मंचन ने भारत की इस प्राचीन कला ने एक बार फिर अपनी एक विशिष्ट छाप छोड़ी है। मूल राजस्थान के नागौर जिले के और वर्तमान में अहमदाबाद निवासी पवनभाई हरिभाई भाट और उनके चाचा महिपालभाई नारणभाई भाट पिछले 25 वर्षों से कठपुतली कला को जीवंत रखने में जुटे हुए हैं। पवनभाई ने बताया कि कठपुतली कला हमारे दादा-परदादा के दौर से हमारी पहचान रही है। पहले हम गांव-गांव जाकर लोगों का मनोरंजन करते थे, लेकिन आज यह कला सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन गई है। उन्होंने कहा कि भारत पर्व-2025 में हमारी इस कला को प्रस्तुत करने का अवसर मिलना हमारे लिए गर्व की बात है। यहां सरकार की ओर से रहने और खाने की सुविधा के साथ ही रोजगार भी मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि कठपुतली का खेल न केवल मनोरंजन का जरिया है, बल्कि यह सामाजिक संदेश देने वाला एक जीवंत माध्यम भी है। इस कला के माध्यम से कलाकार गांवों में स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा कर रहे हैं। पवनभाई ने कहा कि यह कला लोगों तक पहुंचने का सबसे सहज मार्ग है, क्योंकि कठपुतली की भाषा हर कोई समझता है। कठपुतली शब्द सुनते ही बचपन की मीठी यादें ताजा हो जाती हैं। गांव की गली में लालटेन की रोशनी के बीच इकट्ठा हुए बच्चों और बुजुर्गों के बीच जीवंत होती कठपुतली कला उस दौर में मनोरंजन का मुख्य साधन थी, जब टेलीविजन और मोबाइल नहीं थे। आज के टेक्नोलॉजी युग में भले ही मनोरंजन के साधन बदल गए हों, लेकिन कठपुतली कला ने अपना स्थान कायम रखा है। अब यह कला पपेट थियेटर के रूप में शैक्षणिक और सामाजिक संदेश देने के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। माना जाता है कि भारत में कठपुतली की कला लगभग दो हजार वर्ष पुरानी है। राजस्थान की धरती इस कला की जननी मानी जाती है। पतले धागे से नचाई जाने वाली कठपुतलियों के जरिए कलाकार महाराणा प्रताप और अमर सिंह राठौड़ जैसे शूरवीरों की शौर्य गाथाओं और लोक कहानियों की जीवंत प्रस्तुति देते हैं। यह कला राजस्थान की संस्कृति और परंपरा का गौरवशाली प्रतीक बन गई है। भारत पर्व-2025 में देश के विभिन्न राज्यों की लोक कलाओं ने भारतीय संस्कृति की विविधता को शानदार ढंग से प्रस्तुत किया है, जिनमें कठपुतली कला का प्रदर्शन लोकप्रिय आकर्षण बन गया है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में कठपुतली कला की शानदार प्रस्तुति ने उत्साहित लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

यहां सरकार की ओर से कलाकारों को रहने और खाने के साथ-साथ रोजगार भी प्रदान किया जा रहा है, जो लोककलाओं को पुनर्जीवित करने का एक बढ़िया प्रयास है। पवनभाई कहते हैं कि भारत पर्व ने उन्हें उनकी कला को एक नए मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। लोग इस कला का आनंद उठाते हैं और सरकार के संदेश भी आसानी से समझ पाते हैं। भारत पर्व-2025 केवल एक उत्सव ही नहीं है, बल्कि यह परंपरा और प्रगति के बीच एक जीवंत पुल भी है। यहां लोक कला, परंपरागत कारीगरी और आधुनिक भारत की झलक एक साथ देखने को मिलती है। एकता नगर में गूंजती कठपुतली की धुन यह साबित करती है कि भारतीय परंपराएं आज भी जीवंत हैं।

भावनगर रेलवे मंडल के कर्मचारियों ने 1.70 लाख कीमत का यात्री का भूलवश छूटा लैपटॉप सुरक्षित लौटाया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के कर्मचारी अपने सम्मानित यात्रियों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। इसी प्रतिबद्धता का एक उत्कृष्ट उदाहरण वेरावल स्टेशन पर देखने को मिला, जहाँ एक यात्री का लैपटॉप वाला बैग भूलवश सोमनाथ एक्सप्रेस ट्रेन में छूट गया था, जिसे रेलवे कर्मचारियों ने अत्यंत ईमानदारी एवं जिम्मेदारी के साथ सुरक्षित ढूंढ़कर यात्री को लौटा दिया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि 10 नवम्बर, 2025 को एक यात्री ट्रेन नंबर 22957 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल सोमनाथ एक्सप्रेस में बी-1 कोच में चांदलोडिया से केशोद तक यात्रा किये। केशोद पहुंचने के बाद जल्दबाजी में उनका लैपटॉप वाला बैग, सीट पर हीं भूलवश छूट गया। ट्रेन के प्रस्थान करने के बाद उन्होंने रेलमदद ऐप के माध्यम से रेलवे प्रशासन को सूचित किया। रेलमदद पर सूचना प्राप्त होते हीं रेलवे कर्मचारी हरकत में आ गये। कंट्रोल ओफिस से ट्रेन में कार्यरत टीटीई श्री शम्भू प्रसाद को मैसेज किया गया। सूचना प्राप्त होने पर टीटीई श्री शम्भू प्रसाद ने उक्त कोच के बर्थ पर जाकर देखा तो वहां उनको लैपटॉप वाला बैग मिल गया। इसकी सूचना यात्री को दे दी गई और आवश्यक पूछताछ के पश्चात वेरावल स्टेशन पर यात्री को लैपटॉप सहित बैग सौंप दिया गया। लैपटॉप सुरक्षित रूप से प्राप्त होने पर यात्री ने रेलवे प्रशासन के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और सभी संबंधित कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने इस सराहनीय कार्य के लिए संबंधित कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया और कहा कि यह कार्य भारतीय रेल की ईमानदारी, जिम्मेदारी एवं यात्री सेवा की भावना का प्रतीक है।

राइसिन से नरसंहार की साज़िश पकड़ी गई — गुजरात में गिरफ्तार तीनों ने बताया: अहमदाबाद, लखनऊ और दिल्ली थे निशाने पर

(जीएनएस)। गुजरात। हाल में गुजरात पुलिस ने जिन तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया है, उनसे पूछताछ के दौरान सामने आई खबरें चौकाने वाली हैं — ये लोग केवल हथियार-कोई साजिश नहीं रच रहे थे, बल्कि राइसिन जैसे घातक विष को हथियार बनाकर बड़े पैमाने पर जनहानी की साजिश में लिप्त थे। गिरफ्तार आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि उनकी नजर अहमदाबाद, लखनऊ और दिल्ली पर थी; भीड़भाड़ वाले इलाकों के साथ-साथ राजनीतिक/सामाजिक संस्थानों को निशाना बनाने की योजना बन रही थी।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, गुजरात की कार्रवाई के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों और राज्य पुलिसों के बीच साझा जांच का नेटवर्क तुरंत सक्रिय कर दिया गया है। जांच में मिले प्रारंभिक खुलासों के मुताबिक अहमदाबाद में भीड़भाड़ वाले इलाके चिन्हित किए गए थे, लखनऊ में आरएसएस कार्यालयों को निशाना बनाने की योजना बनी थी और दिल्ली में खासतौर पर आजादपुर मंडी इलाके की रेकी की गई थी। आरोपियों ने स्वीकार किया है कि हर स्थान पर उन्होंने मौसम, यातायात और शहरी बनावट की बारीक जानकारी जुटाई — तभी उनकी आतंकवादी रणनीति आख़िरकार बन सकी।

गिरफ्तार आरोपी और उनकी भूमिका की तस्वीर भी स्पष्ट हो रही है। जांच के दौरान सबसे अधिक पढ़ा-लिखा और सक्रिय बदमाश माने जा रहे अहमद सैयद (डॉ. सैयद अहमद) का नाम बार-बार उभरकर आया है। उसके बारे में पता चला है कि वह हैदराबाद में होटल का मालिक भी रहा है, 2008 से 2013 के बीच चीन में एमबीबीएस की पढ़ाई कर चुका है और उसके कई अंतरराष्ट्रीय संपर्क हैं। पुलिस के अनुसार सैयद का लंबा नेटवर्क है और वह ISKP से जुड़े पाकिस्तानी आतंकी हैंडलर अबू खदीजा के निर्देशों पर काम कर रहा था। पूछताछ में यह भी खुलासा हुआ कि सैयद ने राजस्थान के हनुमानगढ़ में हैदराबाद के रहने वाले आरोपियों आजाद और सोहिल से कई खतरनाक सामग्री हासिल कीं।

जांच में एक और भयावह दावे का खुलासा हुआ — सैयद और उसके साथी राइसिन नामक पॉइज़न के पाउडर इकट्ठा कर रहे थे, जिसे खाने-पीने में मिलाकर भीड़ में फैलाया जा सकता था। पुलिस का कहना है कि बरामद पदार्थ पाउडर के रूप में थे और उनसे साइनाइड से भी खतरनाक विष बनाने की तैयारी की जा रही थी। यही नहीं, पूछताछ में आरोपियों ने कबूल किया कि 6 नवंबर की रात वे हथियारों के लेन-देन के इरादे से गुजरात आए थे; वहीं से देश के कई हिस्सों में आतंकी घटनाओं की साजिश को आगे बढ़ाने की योजना बनी।

जम्मू-कश्मीर से जुड़ी गतिविधियों का भी जिक्र हुआ है — गिरफ्तार आतंकी आजाद शेख के एक हफ्ते तक जम्मू-कश्मीर में रहने और वहां से संवेदनशील इलाकों की जानकारी जुटाने के दावे ने जांच की दिशा और संवेदनशील बना दी है। संदिग्धों के बयानों के मुताबिक सभी आरोपियों का पाकिस्तान में बैठे आकाओं से सीधा संपर्क रहा और निर्देश वहीं से आते थे। इसके अलावा, शुरुआती डिजिटल फोरेंसिक में भी मोबाइल-सीडीआर, बैंक लेन-देन और मैसेजिंग ऐक्सचेंज के सबूत मिले हैं, जो उनके पाकिस्तानी संपर्कों और योजनाओं की पुष्टि करते हैं। पुलिस ने डॉ. सैयद के कब्जे से कई संदिग्ध सामान, हथियार, और महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बरामद किए हैं। उन उपकरणों की जांच से कई और राज खुलने की उम्मीद है — किसने सामग्री मुहैया करवाई, कौन-सी जगहों पर विष पहुंचाया जाना था, और किन स्थानीय लोगों को सहयोग के लिए जोड़ने की कोशिश की गई, इन सबका पता मिलने वाला है। राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियां और राज्य पुलिस मिलकर फिलहाल तीनों के नेटवर्क की गहन पड़ताल में जुटी हैं। उनके बयानों के आधार पर ही कई जगहों पर लगातार छापेमारी और संदिग्धों से पूछताछ चल रही है। अधिकारियों ने बताया है कि मामले की संवेदनशीलता के कारण विस्तृत जानकारी अभी नियंत्रित तरीके से जारी की जा रही है ताकि चाल जारी रह सके और और दोषी पकड़े जा सकें। इस पूरे प्रकरण ने एक बार फिर उस खतरे की ओर संकेत कर दिया है जो पढ़े-लिखे, विदेशी संपर्कों वाले आतंकवादियों की नई रणनीतियों में छिपा है — पारंपरिक हथियारों के साथ अब रासायनिक विष का इस्तेमाल कर भी सिविल आबादी को निशाना बनाया जा सकता है। सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि फिलहाल जिन खुलासों की पुष्टि हुई है, वे ही गंभीर हैं और पूरे देश में अलर्ट बढ़ाया गया है। नागरिकों से भी अपील की जा रही है कि किसी भी संदिग्ध घटना, संदिग्ध व्यक्ति या सामान की जानकारी तुरंत नजदीकी पुलिस को दें।

जांच अभी शुरुआती चरण में है, पर अधिकारियों का दावा है कि अब तक मिले सबूतों और गिरफ्तारियों ने एक बड़े हमले को टालने में मदद की है। अगले कुछ दिनों में तकनीकी विश्लेषण और पूछताछ के बाद पूरा नक्शा और साफ होगा — किन स्थानीय अड्डों, किन सहयोगियों और किन विदेशी बैंक-रूट्स के जरिए यह साजिश रची जा रही थी, इसकी पूरी पोल खुलने की उम्मीद की जा रही है।

रायपुर के 'सूट-बूट वाले चोर' गिरफ्तार — शादी में मेहमान बनकर खाया खाना, फिर उड़ाए लाखों रुपए और चांदी की मूर्ति

(जीएनएस)। रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में पुलिस ने ऐसे दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है, जिन्होंने चोरी का तरीका ही बदल दिया — अपराध भी किया, लेकिन अंदाज़ ऐसा जैसे किसी फिल्म का सीन हो। सूट-बूट पहनकर शादी में मेहमान बन पहुंचे ये दोनों युवक दावत में शामिल हुए, खाना खाया, लोगों से घुलमिल गए और फिर मौका देखकर लाखों रुपए व कीमती सामान लेकर फरार हो गए। घटना रायपुर के गुढ़ियारी इलाके स्थित ओशो मैरिज पैलेस की है, जहां बीते गुरुवार रात को शादी समारोह चल रहा था। मेहमानों की भीड़, संगीत और रौनक के बीच किसी ने नहीं सोचा था कि सूट-बूट में सजधज कर आए दो लोग दरअसल चोर हैं। रात के वक्त दोनों ने एक महिला का पर्स चुपचाप उठाया और मौके से निकल गए। उस पर्स में एक लाख रुपए नकद, एक चांदी की मूर्ति और मोबाइल फोन रखा हुआ था।

शुरुआत में किसी को भनक तक नहीं लगी। जब तक चोरी का पता चला, दोनों आरोपी फरार हो चुके थे। शादी में हड़कंप मच गया और पुलिस को तुरंत सूचना दी गई। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की, लेकिन कोई ठोस सुराग नहीं मिला। इसके बाद जांचकर्ताओं ने शादी समारोह का वीडियो फुटेज खंगाला — वहीं से खुली इस 'सूट-बूट वाले चोरों' की गुत्थी।

वीडियो में दो संदिग्ध नजर आए जो बाकी मेहमानों की तरह सजे-धजे थे और खाने की टेबल के पास घूम रहे थे। चेहरे साफ दिखाई दे रहे थे, इसलिए पुलिस ने उसी फुटेज के आधार पर तलाश शुरू की। जल्द ही दोनों की पहचान हुई — नवीन मानिकपुरी उर्फ लल्ला और किशन साहू के रूप में। दोनों आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में पता चला कि उन्होंने चोरी से पहले रेकी की थी — जिस दिन टेंट लगाया जा रहा था, उस वक्त वे हॉल देखने पहुंचे थे। उसी समय उन्होंने ये तय किया कि रात में शादी के दौरान भीड़ का फायदा उठाकर चोरी करेंगे। योजना के मुताबिक दोनों सूट-बूट पहनकर समारोह में पहुंचे, खाना खाया और मेहमानों में घुलमिल गए। मौका मिलते ही उन्होंने पर्स उठाया और पैदल ही बाहर निकल गए। पुलिस ने छापेमारी के दौरान आरोपियों से चोरी किया हुआ मोबाइल और कुछ कैश बरामद कर लिया है। हालांकि, पुलिस के अनुसार चोरी के एक बड़े हिस्से का पैसा दोनों आरोपियों ने पहले ही खर्च कर दिया था। जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी नवीन मानिकपुरी पहले भी चोरी के मामलों में जेल जा चुका है।

गुढ़ियारी थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उनसे यह भी पूछताछ की जा रही है कि क्या उन्होंने इसी तरह की वारदातें अन्य शादियों या समारोहों में भी की हैं। पुलिस ने नागरिकों को सतर्क रहने की सलाह दी है, खासकर विवाह समारोह जैसे आयोजनों में — जहां भीड़ का फायदा उठाकर ऐसे 'सूट-बूट वाले चोर' आसानी से मेहमान बनकर घुस जाते हैं।

रायपुर की इस घटना ने लोगों को हैरान कर दिया है। किसी ने सोशल मीडिया पर लिखा — "अब तो चोरी भी क्लास के साथ होती है, सूट-बूट में क्राइम!" वहीं पुलिस के मुताबिक, यह मामला दिखाता है कि अपराधी अब खुद को भीड़ में घुलाने के लिए कितनी चालाकी से अपनी छवि बदल रहे हैं।

धान की फसल में आगः बेटी की शादी, कर्ज और सरकारी बेरुखी ने तोड़ दिया किसान चंद्रपाल का हौसला

(जीएनएस)। उधमसिंहनगर। उत्तराखंड के उधमसिंह नगर जिले के किच्छा क्षेत्र में एक किसान ने सोमवार को अपनी ही मेहनत की कमाई — धान की फसल — को आग के हवाले कर दिया। यह आग सिर्फ धान में नहीं, बल्कि उस व्यवस्था में लगी जो महीनों से किसानों की उम्मीदों को झुलसा रही है। किसान चंद्रपाल की कहानी उन हजारों किसानों की आवाज़ बन गई है जो सरकारी खरीद की अव्यवस्था, बाजार में गिरते दाम और आर्थिक बोझ से टूट चुके हैं। ग्राम दरऊ का रहने वाला किसान चंद्रपाल पिछले एक महीने से सरकारी धान क्रय केंद्र के चक्कर काट रहा था। उसने करीब 60 कुंतल धान सरकारी केंद्र पर बेचने के लिए जमा किया था, लेकिन केंद्र प्रभारी ने उसे बार-बार यह कहकर लौटा दिया कि "लिमिट पूरी हो चुकी है, तौल अभी नहीं हो सकती।" महीनेभर से निराश लौटते-लौटते उसका सब्र जवाब दे गया। बेटी की शादी महज 15 दिन बाद थी और बैंक का कर्ज सिर पर चढ़ा था। खुले बाजार में धान एमएसपी से काफी कम दाम पर बिक रही थी। इस आर्थिक जकड़न में वह अंदर से पूरी तरह टूट गया। सोमवार को उसने सरकारी क्रय केंद्र पर ही अपने धान के ढेर में आग लगाने की कोशिश की। देखते ही देखते लपटें उठीं, लेकिन मौके पर मौजूद अन्य किसानों ने किसी तरह आग बुझा दी और बड़ा नुकसान होने से बचा लिया। चंद्रपाल की आंखों में गुस्सा नहीं, बेबसी थी। उसने कहा — "सरकारी केंद्र पर बार-बार जाता हूं, पर अधिकारी सिर्फ तारीख देते हैं। अब घर में शादी है, बैंक वाले किश्त मांग रहे हैं, मैं क्या करूं?"

घटना की खबर मिलते ही कांग्रेस विधायक तिलक राज बेहड़ मौके पर पहुंचे। उन्होंने किसानों से मुलाकात की और प्रशासन पर तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि अगर जल्द ही खरीद शुरू नहीं हुई तो किसान सड़कों पर उतरेंगे। बेहड़ ने कहा — "सरकार किसानों के धैर्य की परीक्षा ले रही है। जो किसान सालभर पसीना बहाता है, आज वही अपनी उपज को जलाने को मजबूर है। यह सिर्फ उसकी नहीं, पूरे कृषि तंत्र की विफलता है।" प्रशासन के अनुसार, फिलहाल उधमसिंह नगर जिले के सभी सरकारी क्रय केंद्रों पर धान खरीद बंद है क्योंकि निर्धारित लिमिट पूरी हो चुकी है। जिले में कुल 254 सरकारी खरीद केंद्र हैं, जबकि पूरे कुमाऊं मंडल में 296। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक अब तक 6.58 लाख मीट्रिक टन के लक्ष्य में से 5.30 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी जा चुकी है। दरऊ केंद्र की हालत यह है कि खुलने के बाद से अब तक केवल 9 दिन ही तौल हुई, जिसके बाद से 49 किसानों का लगभग 4,000 कुंतल धान खुले में पड़ा हुआ है — बारिश, धूप और खराब होने के खतरे के बीच।

घटना के बाद किसानों ने सामूहिक रूप से तहसील कार्यालय पहुंचकर एसडीएम गौरव पांडे को ज्ञापन सौंपा। एसडीएम ने बताया कि आरएफसी को खरीद लिमिट बढ़ाने का अनुरोध भेजा गया है और जल्द ही तौल फिर शुरू की जाएगी।

लेकिन सवाल यह है कि जब तक सरकारी कागज आगे बढ़ेंगे, तब तक कितने और चंद्रपाल अपनी मेहनत की फसल को राख बनते हुए देखेंगे? धान के ढेर में उठी वह आग केवल एक खेत में नहीं जली — वह आग हर उस किसान के दिल में जल उठी है जो इस तंत्र की उदासीनता से रोज़ झुलस रहा है।

महोबा में कुएँ से तीन सगी बहनों की दर्दनाक मौत गांव में शोक, परिजन हत्या की आशंका पर जिद

(जीएनएस)। महोबा। उत्तर प्रदेश के महोबा जिले के आरी गांव में देर रात एक ऐसी त्रासदी घटित हुई जिसने पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया। अजनर थाना क्षेत्र के उस पुराने खेत के कुएँ से तीन सगी बहनों के शव बरामद हुए — सात साल की रुचि, पांच साल की दीक्षा और तीन साल की पुष्पा। घटना की खबर मिलते ही गांव में कोहराम मच गया; घर में चीख-पुकार और परिजनों का बेसहारा रो-रोकर बुरा हाल है।

परिवार ने बताया कि सोमवार को बड़ी बहन रेखा (12) अपनी चारों बहनों में से तीन को लेकर गाय चराने जंगल गई थी। भूख लगने पर रेखा ने उन तीनों को घर भेज दिया और खुद खेत पर रुक गई। जब वे वापस नहीं लौटे तो परिवार ने ढूँढना शुरू किया। जब रात तक कोई सुराग न मिला तो परिजन व गांव वालों ने पुलिस को सूचना दी। अजनर थाना पुलिस व स्थानीय लोगों ने रात में सर्च ऑपरेशन चलाया और उसी खेत के पास स्थित पुराने कुएँ से तीनों बच्चियों के शव बरामद किए।

एसपी प्रबल प्रताप सिंह ने मीडिया को बताया कि शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है और हर पहलू से जांच की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक तौर पर पुलिस जाँच में यह धारणाएँ बन रही हैं कि बच्चियां खेलते समय कुएँ में गिरकर डूब गई होंगी, पर हत्या की संभावना को भी पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता। इसलिए फोरेंसिक, पोस्टमॉर्टम और अन्य तकनीकी पड़ताल के साथ-साथ स्थानीय बयानों को भी कड़ाई से परखा जा रहा है।

परिजन और ग्रामीण घटना को लेकर शंकालु हैं। मृतक बच्चियों के चाचा मूलचंद्र ने बताया कि जब तक वे घर लौटे, तीनों बच्चे गाय-भैंस चराने गए हुए थे और अचानक गाय-गोठ से लौटने पर घर में तीनों का पता नहीं चला। परिवार का कहना है कि वे किसी भी परिस्थिति में निष्पक्ष और पारदर्शी तफ्तीश चाहते हैं और अगर कोई अपराधी तत्व जुड़ा है तो उसे सज़ा मिले। गांव के लोगों ने भी प्रशासन से कहा है कि मामले की गहरी जांच हो और चारों दिशाओं में पड़े सुरागों को नज़रअंदाज़ न किया जाए।

मोहल्ले और आस-पास के लोग कुएँ के ढाँके और आसपास की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं। कई ग्रामीण कहते हैं कि उस कुएँ पर दीवारें कमजोर थीं और ढक्कन भी ठीक से नहीं था, जिससे छोटे बच्चे आसानी से हादसे का शिकार हो सकते हैं। वहीं कुछ ने घटना के संदर्भ में अजीब परिस्थितियों और समय-सीमा पर भी संदेह जताया है — इसीलिए वे चाहते हैं कि सील कर दी गई जगह की फोरेंसिक जांच तेज़ी से हो। पुलिस ने कहा कि कुएँ के किनारे से मिलने वाली किसी भी कटे-फटे वस्तु, पैरों के निशान या अन्य भौतिक प्रमाण का वैज्ञानिक विश्लेषण कराया जा रहा है।

इस दर्दनाक मामले ने बच्चों की सुरक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित जल-स्रोतों की अनदेखी पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय पंचायतों और प्रशासन से अपील यह उठ रही है कि खुले या असुरक्षित कुओं की पहचान कर उन्हें ढाँकने, चेतावनी लगाने और बच्चों को रोकने के लिए कदम उठाए जाएँ ताकि ऐसी घटनाएँ दोबारा न हों।

पंजाब के छोटे से गांव से शुरू हुआ 51 रुपये का सफर और बॉलीवुड के हीमैन बनने तक की कहानी — धर्मेंद्र का संघर्ष, प्यार और अमर सफलता का अध्याय

(जीएनएस)। हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ चेहरे ऐसे हैं जो सिर्फ पर्दे पर नहीं, बल्कि दर्शकों के दिलों में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। धर्मेंद्र सिंह देओल ऐसा ही एक नाम हैं — जिनकी मुस्कान, मर्दाना अंदाज़ और दिल छू लेने वाली सादगी ने उन्हें "हीमैन ऑफ बॉलीवुड" का दर्जा दिया। पंजाब के नसराली गांव से निकला एक साधारण लड़का, जो कभी गैराज में मजदूरी करता था, वही आगे चलकर सिनेमा का सितारा बन गया। आज जब उनकी तबीयत नाजुक है और पूरा देश उनकी सलामती की दुआ कर रहा है, तो यह जरूरी हो जाता है कि हम उस सफर को याद करें जो 51 रुपये से शुरू होकर तीन सौ से अधिक फिल्मों की चमक तक पहुंचा। धर्मेंद्र का जन्म 8 दिसंबर 1935 को पंजाब के लुधियाना ज़िले के नसराली गांव में हुआ। बचपन से ही उन्हें फिल्मों का शौक था। स्कूल में वे सिनेमा के किरदारों की नकल करते थे और आईने के सामने डायलॉग बोलते थे। लेकिन उनके सपनों की राह आसान नहीं थी। परिवार खेती-बाड़ी करता था और आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी। बावजूद इसके, धर्मेंद्र ने फिल्मों में करियर बनाने की ठान ली। वे अपने गांव से निकलकर मुंबई पहुंचे, जहां न तो उनके पास रहने की जगह थी और न ही खाने के पैसे। जीविका चलाने के लिए उन्होंने एक गैराज में काम शुरू किया। 200 रुपये महीने की नौकरी में दिनभर पसीना बहाने के बाद रात में वे उसी गैराज में सो जाते थे।

फिल्मों में पहला मौका उन्हें 1960 में मिला। अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म दिल भी तेरा हम भी तेरे से उनका फिल्मी सफर शुरू हुआ। उस फिल्म के लिए उन्हें कुल 51 रुपये मिले थे — 17 रुपये तीन लोगों ने मिलकर दिए थे। उस वक्त ये रकम बहुत मामूली थी, लेकिन धर्मेंद्र के लिए यह उनकी जिंदगी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। वह नोट उन्होंने सालों तक संभालकर रखा, क्योंकि वही उनके सपनों की पहली कमाई थी।

1960 के दशक में धर्मेंद्र धीरे-धीरे फिल्मी दुनिया में पहचान बनाने लगे। उनके चेहरे पर मासूमियत और शरीर पर एक अलग ही रौब था। 1966 में आई पत्थर के फूल ने उन्हें एक्शन हीरो के रूप में स्थापित कर दिया। फिल्म सुपरहिट रही और धर्मेंद्र का नाम दर्शकों की जुबान पर चढ़ गया। उसी दौर में आई आई मिलन की बेला में उन्होंने पहली बार निगेटिव किरदार निभाया और दर्शकों को चौंका दिया। लोग कहने लगे कि धर्मेंद्र सिर्फ रोमांस और एक्शन नहीं, बल्कि हर भूमिका में ढल जाने की क्षमता रखते हैं। लेकिन धर्मेंद्र की जिंदगी सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं थी। उनकी निजी जिंदगी भी उतनी ही चर्चा में रही। जब वह बॉलीवुड में संघर्ष कर रहे थे, तब उनकी शादी 1954 में प्रकाश कौर से हो चुकी थी। उनके चार बच्चे हुए — सनी देओल, बॉबी देओल और दो बेटियां। लेकिन 1970 के दशक में जब उन्होंने हेमा मालिनी के साथ काम करना शुरू किया, तो किस्मत ने उन्हें एक नई दिशा दी। शोले के सेट पर हेमा और धर्मेंद्र की नज़दीकियां बढ़ीं। कहा जाता है कि धर्मेंद्र हेमा के साथ सीन दोहराने के लिए लाइटमैन को रिश्वत तक दे देते थे ताकि शॉट खराब हो जाए और रीटेक मिले।

धीरे-धीरे यह रिश्ता प्यार में बदल गया और 1980 में दोनों ने शादी कर ली। चूंकि धर्मेंद्र पहले से शादीशुदा थे और तलाक नहीं लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने इस्लाम धर्म अपनाकर हेमा मालिनी से निकाह किया। यह फैसला विवादों में घिरा, लेकिन धर्मेंद्र और हेमा आज भी हिंदी सिनेमा के सबसे प्रतिष्ठित जोड़ों में गिने जाते हैं।

अपने करियर में धर्मेंद्र ने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया और हर किरदार में अपनी छाप छोड़ी। फूल और पत्थर, अनुपमा, सत्यकाम, राजा जानी, सीता और गीता, यादों की बारात, चुपके चुपके, शोले और धरम-वीर जैसी फिल्मों ने उन्हें अमर बना दिया। शोले में वीरू के किरदार में उनका जोश, सत्यकाम में उनकी गहराई और चुपके चुपके में उनकी कॉमेडी ने दर्शकों को यह एहसास दिलाया कि धर्मेंद्र किसी एक छवि में बंधने वाले कलाकार नहीं हैं।

वह बॉलीवुड के पहले ऐसे हीरो बने, जिन्हें "हीमैन" कहा गया — न केवल उनके शरीर की मजबूती के कारण, बल्कि उनके जज़्बे और मेहनत के कारण भी। उन्होंने कभी अभिनय को पेशा नहीं, बल्कि पूजा समझा। जीवन के हर उतार-चढ़ाव में उन्होंने मुस्कान नहीं खोई। आज धर्मेंद्र की उम्र 89 साल है और वे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी तबीयत को लेकर कई अफवाहें फैल चुकी हैं, जिन्हें बेटी ईशा देओल ने सिरे से खारिज किया है। ईशा ने कहा, "पापा स्थिर हैं, दुआ कीजिए कि वे जल्द ठीक होकर फिर मुस्कराएं।"

धर्मेंद्र का सफर सिर्फ एक अभिनेता का नहीं, बल्कि उस इंसान का है जिसने गरीबी, संघर्ष और ताने झेलकर भी अपने सपनों से समझौता नहीं किया। वह उस दौर का प्रतीक हैं जब सिनेमा भावनाओं से चलता था, मशीनों से नहीं।

51 रुपये से शुरू हुई उनकी कहानी ने लाखों दिलों में करोड़ों की भावनाएं जगा दीं। धर्मेंद्र आज भी लोगों के लिए मेहनत, सादगी और प्रेम का प्रतीक हैं — एक ऐसा सितारा जो चाहे अस्पताल के कमरे में हो या पर्दे पर, हमेशा उजाला ही फैलाता है।

संतकबीरनगर में शादी की खुशियां बनी खौफनाक वारदात, विदाई के वक्त दूल्हे के परिवार को रस्सियों से बांधकर बेरहमी से पीटा गया

(जीएनएस)। उत्तर प्रदेश के संतकबीरनगर जिले में एक दर्दनाक और हैरान कर देने वाली घटना ने पूरे इलाके को झकझोर दिया है। एक शादी जो दो परिवारों के रिश्ते जोड़ने का प्रतीक थी, वह विदाई के समय ऐसी हिंसक जंग में बदल गई कि दूल्हे के परिवार को रस्सियों से बांधकर बेरहमी से पीटा गया। यह घटना मेंहदावल थाना क्षेत्र के शेखपुर गांव में घटित हुई, जहां दूल्हे के पिता कुर्बान अली अपने बेटे करीम की नवविवाहिता पत्नी शमा परवीन को विदा कराने पहुंचे थे। लेकिन जहां विदाई की रस्में पूरी होनी थीं, वहां कुछ ही मिनटों में अफरा-तफरी और चीख-पुकार मच गई।

मिली जानकारी के अनुसार, शादी पूरी होने के बाद जब दूल्हे पक्ष विदाई के लिए पहुंचा, तब कन्या पक्ष के कुछ लोगों ने अचानक विवाद शुरू कर दिया। बताया जाता है कि किसी छोटी-सी बात पर कहासुनी हुई, जिसके बाद माहौल बिगड़ गया और कन्या पक्ष के कई लोग उग्र हो गए। देखते ही देखते उन्होंने दूल्हे के पिता, उसकी मां और अन्य परिजनों को पकड़ लिया। किसी ने रस्सी लाकर उनके हाथ-पैर बांध दिए और फिर डंडों से उनकी बेरहमी से पिटाई शुरू कर दी। बताया जा रहा है कि मारपीट के दौरान दूल्हे की मां मेहरुन्निशा और भाई नसीम को गंभीर चोटें आईं।

पीड़ित कुर्बान अली, जो गोरखपुर जिले के सहजनवा थाना क्षेत्र के डुमरी गांव के रहने वाले हैं, ने पुलिस में दी गई तहरीर में बताया कि जब वह और उनका परिवार दुल्हन को विदा कराने के लिए शेखपुर पहुंचे, तो विदाई की रस्मों के दौरान ही अचानक कन्या पक्ष के लोग गाली-गलौज करने लगे। उन्होंने गाली देने से मना किया तो कन्या पक्ष के करीब नौ लोगों ने मिलकर हमला कर दिया। तहरीर में कुर्बान अली ने जिन लोगों के नाम लिए हैं, उनमें शमा परवीन, खलीफुन्निशा, समीउल्लाह, मशरुर आलम, निशार अहमद, इम्तियाज, आबिदा खातून, साबिया खातून और साबिर अली शामिल हैं।

पीड़ित परिवार के मुताबिक, कन्या पक्ष के लोगों ने पहले घर का दरवाजा बंद किया, फिर परिवारवालों को रस्सी से बांधा और जमकर पीटा। यह सब उस समय हुआ जब शादी के कुछ रिश्तेदार और बच्चे भी वहां मौजूद थे। घटना की खबर फैलते ही गांव में अफरा-तफरी मच गई। कुछ लोगों ने मोबाइल पर इस घटना की वीडियो रिकॉर्डिंग कर ली, जो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो चुकी है। वीडियो में साफ दिख रहा है कि दूल्हे के पिता और अन्य लोग बंधे हुए हैं और बुरी तरह घायल हैं।

घटना की सूचना पाकर मेंहदावल पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने पीड़ितों की तहरीर के आधार पर नौ लोगों के खिलाफ मारपीट, धमकी और अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। मेंहदावल थानाध्यक्ष सतीश कुमार सिंह ने बताया कि यह मामला अत्यंत गंभीर है और जांच में कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। उन्होंने कहा कि नामजद आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही है और जल्द ही गिरफ्तारी की जाएगी।

गांव के लोगों के अनुसार, दोनों परिवारों के बीच पहले से कुछ मनमुटाव था, जो शादी के बाद विदाई के समय हिंसा में बदल गया। एक ग्रामीण ने बताया कि विदाई की रस्म के दौरान जब दूल्हे के पिता ने दहेज के मुद्दे पर कुछ कहा, तो लड़की के रिश्तेदार भड़क गए और फिर विवाद ने हिंसक रूप ले लिया।

फिलहाल पुलिस दोनों पक्षों से पूछताछ कर रही है। घायल कुर्बान अली और उनके परिवार का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। उनका कहना है कि वे सिर्फ अपनी बहू को विदा कराने गए थे, लेकिन उनके साथ ऐसा सलूक हुआ जैसे किसी दुश्मन से किया जाता है। उन्होंने कहा कि जब रस्सी से बांधकर उन्हें पीटा जा रहा था, तो कोई भी मदद के लिए आगे नहीं आया।

इस घटना ने पूरे संतकबीरनगर जिले में आक्रोश फैला दिया है। लोग कह रहे हैं कि जिस शादी को खुशियों का प्रतीक होना चाहिए था, वह अब अपमान और हिंसा की कहानी बन गई है। स्थानीय प्रशासन ने कहा है कि मामले की जांच निष्पक्ष रूप से की जाएगी और दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

यह घटना समाज के उस कटु सच को भी सामने लाती है, जहां रिश्तों की गर्माहट अब छोटी-छोटी बातों पर हिंसा में बदलने लगी है। गांव में आज भी उस दिन की चीखें गूंज रही हैं, जब एक दूल्हे का परिवार दुल्हन की विदाई के बजाय अपने ही खून में लथपथ होकर पुलिस की गाड़ी में बैठा।